Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

اَیَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ فَمَنۡ کَانَ مِنۡکُمۡ
مَّرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ
فَعِدَّۃٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ

(सूरः बकरः , आयत : 185)

अनुवाद: गिनती के लिए कुछ ही दिन बचे हैं। अतः तुममें से जो कोई बीमार हो या यात्रा पर हो, तो उसे चाहिए कि अन्य दिनों में भी उतने ही रोज़े रखे।

वर्ष- 10
अंक - 14-15
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

4-11 शवाल , 1446 हिज्री कमरी, 03-10 शहादत 1404 हिज्री शम्सी, 3-10 अप्रैल 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रामज़ान की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जब रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब रमज़ान का महीना आ जाता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शैतानों को ज़ंजीरों में जकड़ दिया जाता है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो कोई लैलतुल-क़द्र में ईमान रखते हुए और सवाब की नीयत से इबादत में खड़ा हो, उसके अगले-पिछले गुनाह माफ कर दिए जाएंगे। और जो कोई रमज़ान के रोज़े ईमान और सवाब की नीयत से रखेगा, उसके पिछले गुनाह माफ कर दिए जाएंगे।

(सहीह बुख़ारी,भाग 3, किताबुस-स्याम, प्रकाशित 2008, क़ादियान)

★ ★ ★

شَہۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡہِ الۡقُرۡاٰنُ

"शहरु रमज़ानल्लज़ी उन्ज़िला फीहिल क़ुरआन" से माह-ए-रमज़ान की अज़मत मालूम होती है सूफ़िया ने लिखा है कि यह माह तंवीर-ए-क़ल्ब के लिए उम्दा महीना है, इसमें बहुत अधिक मुक़ाशिफ़ात होते हैं। सलात तज़किया-ए-नफ़्स करती है और रोज़ा तजल्ली-ए-क़ल्ब करता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मग़रिब की नमाज़ से कुछ मिनट पहले माह-ए-रमज़ान का चाँद देखा गया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मग़रिब की नमाज़ अदा करके मस्जिद की छत पर तशरीफ़ ले गए ताकि चाँद देखें। जब चाँद देखा, तो वापस मस्जिद में तशरीफ़ लाए।

फ़रमाया कि: "पिछला रमज़ान ऐसा मालूम होता है जैसे कल गया था।" शहरु रमज़ानल्लज़ी उन्ज़िला फीहिल क़ुरआन भी एक फ़िक़रा है जिससे माह-ए-रमज़ान की अज़मत मालूम होती है।

सूफ़िया ने लिखा है कि यह माह तंवीर-ए-क़ल्ब के लिए उम्दा महीना है, इसमें बहुत अधिक मुक़ाशिफ़ात होते हैं। सलात तज़किया-ए-नफ़्स करती है और रोज़ा तजल्ली-ए-क़ल्ब करता है।

तज़किया-ए-नफ़्स से मुराद यह है कि नफ़्स-ए-अम्मारा की शहवतों से दूरी हासिल हो जाए और तजल्ली-ए-क़ल्ब से यह मुराद है कि कश्फ़ का दरवाज़ा उस पर खुले और वह अल्लाह को देख ले।

इसलिए "उन्ज़िला फीहिल क़ुरआन" में यही इशारा है। इसमें कोई शक नहीं कि रोज़े का अज्र अज़ीम है लेकिन बीमारियाँ और दुनियावी मसलहतें इंसान को इस नेअमत से महरूम रखती हैं। मुझे याद है कि जवानी के दिनों में मैंने एक बार ख्वाब में देखा कि रोज़ा रखना सुन्नत-ए-अहले बैत है।

मेरे हक़ में पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सलमानु मिन्ना अहलुल बैत"(सलमान अर्थात् अस-सुल्हान कि इस शख़्स के हाथ से दो सुलह होंगी एक अंदरूनी और दूसरी बाहरी, और यह अपना काम नरमी से करेगा, न कि तलवार से।) मैं मशरब-ए-हुसैन पर नहीं हूँ, जिन्होंने जंग की, बल्कि मशरब-ए-हसन पर हूँ, जिन्होंने जंग नहीं की। मैंने समझा कि यह इशारा रोज़े की तरफ़ है, इसलिए मैंने छह महीने तक रोज़े रखे।

इस दौरान मैंने देखा कि अनवार के स्तंभ के स्तंभ आसमान की तरफ़ जा रहे हैं। यह मामला मुश्तबह है कि अनवार के स्तंभ ज़मीन से आसमान की तरफ़ जा रहे थे या मेरे क़ल्ब से, लेकिन यह सब कुछ जवानी में हो सकता था। अगर उस वक़्त मैं चाहता, तो चार साल तक रोज़ा रख सकता था।

(मल्फ़ूज़ात,भाग 3, पृष्ठ 424, प्रकाशन 2018 क़ादियान)

रोज़ा का एक आध्यात्मिक लाभ यह है कि इंसान का अल्लाह तआला से उच्च स्तर का संबंध स्थापित हो जाता है और अल्लाह तआला खुद उसका संरक्षक बन जाता है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"रोज़ों का एक आध्यात्मिक लाभ यह भी है कि इससे इंसान अल्लाह तआला से समानता हासिल कर लेता है। अल्लाह तआला की एक विशेषता यह है कि वह नींद से पाक है। इंसान ऐसा तो नहीं कर सकता कि वह अपनी नींद को पूरी तरह छोड़ दे, परंतु वह अपनी नींद के एक हिस्से को रोज़ों में अल्लाह तआला के लिए कुर्बान ज़रूर करता है। वह सहरी खाने के लिए उठता है, तहज्जुद पढ़ता है। महिलाएँ, जो रोज़ा नहीं भी रखतीं, वे भी सहरी की तैयारी के लिए जागती हैं। कुछ समय दुआओं में और कुछ नमाज़ में व्यतीत करना पड़ता है और इस तरह रात का बहुत कम हिस्सा सोने के लिए बचता है। कामकाजी लोगों के लिए तो गर्मी के मौसम में केवल दो-तीन घंटे ही नींद के लिए मिल पाते हैं। इस तरह इंसान को अल्लाह तआला से एक प्रकार की समानता प्राप्त हो जाती है।

इसी तरह, अल्लाह तआला खाने-पीने से पाक है। इंसान पूरी तरह खाना-पीना तो नहीं छोड़ सकता, लेकिन फिर भी रमज़ान में वह अल्लाह तआला से एक तरह की समानता ज़रूर प्राप्त कर लेता है। फिर जिस तरह अल्लाह तआला से केवल भलाई प्रकट होती है, उसी तरह इंसान को भी रोज़ों में विशेष रूप से नेकियाँ करने का आदेश दिया गया है।

रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया है:"जो व्यक्ति ग़ीबत, चुगली और बुरी बातों से परहेज़ नहीं करता, उसका रोज़ा नहीं होता।"

अर्थात्, मोमिन भी यह प्रयास करता है कि उससे केवल भलाई ही प्रकट हो और वह ग़ीबत तथा लड़ाई-झगड़े से दूर रहे। इस प्रकार, वह उस हद तक अल्लाह तआला से समानता प्राप्त कर लेता है, जितनी हद तक संभव हो सकता है। और यह स्पष्ट है कि हर चीज़ अपनी जैसी चीज़ की ओर आकर्षित होती है।

फारसी में एक कहावत है: "कुंद हमजिंस बाहम जिंस परवाज़" (अर्थात्, समान प्रकृति वाले एक साथ उड़ते हैं)।

इसलिए, रोज़े का एक आध्यात्मिक लाभ यह है कि इंसान का अल्लाह तआला से उच्च स्तर का संबंध स्थापित हो जाता है और अल्लाह तआला खुद उसका संरक्षक बन जाता है।

(तफ़्सीर-ए-कबीर,भाग 2, पृष्ठ 378, प्रकाशित 2010, क़ादियान)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ऐसे-ऐसे इल्मी, धार्मिक और प्रशासनिक कार्य करवाए कि बड़े-बड़े विद्वान भी आपके सामने प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी लगते हैं, बिल्कुल बच्चे प्रतीत होते हैं। आपका बावन वर्ष का खलीफाई दौर इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आज पहले से अधिक मुस्लिम दुनिया और अरब जगत को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है कि केवल नारे लगाने और बैठकों के आयोजन से काम नहीं बनेगा। ठोस कदम उठाने होंगे।

"मुसलमान अपनी भूल स्वीकार करके अल्लाह तआला की ओर रुजू करें, स्वयं इस्लाम को समझें और इसकी वास्तविकता से परिचित हों तथा दूसरों को भी इससे अवगत कराएँ, ताकि वह बदहाली और अवनति, जो इस समय मुसलमानों पर आ रही है, समाप्त हो सके... यदि उन्होंने धर्म की खातिर इसका प्रचार नहीं किया, यदि अल्लाह के आदेश के अनुसार इस अनुपम शिक्षा को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया, तो अब अपनी जीवन रक्षा के लिए ही कुछ प्रयास करें, क्योंकि उनकी जीविका और इस्लाम का प्रचार, दोनों एक-दूसरे के लिए अनिवार्य हो गए हैं।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

व्यापार, उद्योग और हस्तकला में भी मुसलमानों की उन्नति के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुसलमानों को यह नसीहत दी कि वे आपसी मतभेद और विभाजन को त्याग दें और राष्ट्रीय हित में एकता और संगठन से कार्य करें। केवल इसी माध्यम से वे विरोधी समुदायों का सामना करते हुए अपने अधिकार प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

"तफ्सीर-ए-कबीर" पहले दस खंडों में थी, और अब आपके नोट्स के आधार पर इसमें कुछ और सामग्री जोड़ी गई है, जिससे यह अब पंद्रह खंडों में प्रकाशित हो चुकी है। विषयों को और अधिक विस्तार से समझाया गया है। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य सूरहों की तफ्सीर के भी आपके कुछ नोट्स प्राप्त हुए हैं, जिनका मूल्यांकन किया जा रहा है। संभवतः जब उन्हें प्रकाशित किया जाएगा, तो यह तीस खंडों तक पहुँच सकती है, क्योंकि कुल तीस हजार पृष्ठ हैं।

हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान और आध्यात्मिकता से जुड़े इस साहित्य को पढ़ने का प्रयास करना चाहिए। इसमें कई ऐसी बातें हैं जो वर्तमान समय की परिस्थितियों पर भी लागू होती हैं और जिनसे हम लाभ उठा सकते हैं।

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के संदर्भ में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अद्भुत विद्वतापूर्ण कार्यों का संक्षिप्त और ज्ञानवर्धक विवरण।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 21 फ़रवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी इस भविष्यवाणी के संदर्भ में विभिन्न जमाअतों में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक विस्तृत भविष्यवाणी है, जिसमें एक पुत्र के जन्म और उसकी विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। 20 फ़रवरी 1886 को इसे एक इश्तिहार के रूप में प्रकाशित किया गया था। इस भविष्यवाणी में उस पुत्र की विशेषताओं के बारे में इल्हामी शब्दों में कहा गया है: "वह अत्यंत बुद्धिमान और समझदार होगा" और आगे कहा गया है: "...वह बाहरी और आंतरिक ज्ञान से भरपूर होगा।"

(आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 5, पृष्ठ 647)

अल्लाह तआला ने इस भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक ऐसा पुत्र प्रदान किया, जो इन विशेषताओं से संपन्न था। उनका नाम हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद था, जिन्हें "मुस्लेह मौऊद" भी कहा जाता है। जो भी जमाअत की इतिहास से परिचित हैं, विशेष रूप से बच्चे और युवा भी, इस भविष्यवाणी को अच्छी तरह जानते हैं। जमाअत के हर वर्ग में अत्फाल (बच्चों) से लेकर खुद्दाम (युवाओं) तक इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

जैसा कि भविष्यवाणी में कहा गया था कि "वह लड़का बाहरी और आंतरिक ज्ञान से भरपूर होगा," अल्लाह तआला ने उनकी बुद्धिमत्ता को विकसित किया और उन्हें ज्ञान से संपन्न किया।

दुनियावी शिक्षा के लिहाज से उनकी शिक्षा प्राथमिक स्तर की भी नहीं थी। हालांकि, उन्होंने स्कूल में दाखिला लिया था, लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्स-

लाम ने स्वयं लिखा है कि वे परीक्षाओं में कभी पास नहीं होते थे। वे दुनियावी विषयों में बहुत कमजोर थे, लेकिन अल्लाह तआला ने उनसे ऐसे-ऐसे विद्वतापूर्ण, धार्मिक और प्रशासनिक कार्य करवाए कि बड़े-बड़े शिक्षित लोग भी उनके सामने प्राथमिक स्तर के छात्र लगते थे। उनका बावन वर्षों का खलीफाई दौर इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

उन्होंने विभिन्न विषयों पर असंख्य व्याख्यान दिए और लेख लिखे। कुरआनी और धार्मिक विषयों पर तो उनकी विद्वत्ता की कोई सीमा ही नहीं थी। उन्होंने दुनियावी विषयों पर भी, राष्ट्रीय राजनीति और अंतरराष्ट्रीय राजनीति से जुड़े विषयों पर भाषण दिए और लेख लिखे। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी उन्होंने असाधारण गुणवत्ता के लेख और व्याख्यान प्रस्तुत किए। उन्होंने आर्थिक विषयों और दुनिया की विभिन्न व्यवस्थाओं जैसे समाजवाद (Socialism), साम्यवाद (Communism), पूंजीवाद (Capitalism) आदि पर गहरी समीक्षा प्रस्तुत की। उनकी एक महत्व-पूर्ण तक़रीर "इस्लाम का आर्थिक प्रणाली" थी, जिसे बाद में पुस्तक के रूप में प्र-काशित किया गया।

यह साहित्य जमाअत के अध्ययन संग्रह में सुरक्षित है। यहां तक कि सैन्य मामलों, सेना से जुड़े विषयों और वैज्ञानिक व विद्वतापूर्ण विषयों पर भी उन्होंने ऐसे ज्ञानवर्धक विचार प्रस्तुत किए कि मानव बुद्धि आश्चर्यचकित रह जाती है। उन्होंने कई व्याख्यान बाहरी समुदायों के समक्ष भी दिए, और वे भी उनकी गहराई और ज्ञान की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके। उनकी लिखी गई तक़रीरें और लेख हजारों पृष्ठों पर फैले हुए हैं।

संक्षिप्त समय में इनकी विस्तार से व्याख्या करना संभव नहीं है, बल्कि केवल परिचय देना भी कठिन है। कुछ विषयों के उदाहरणस्वरूप, "इस्लाम का आर्थिक प्रणाली," "निज़ाम-ए-नौ" (नई व्यवस्था), "इस्लाम में मतभेदों की शुरुआत" ये विषय ऐसे हैं जिनका अक्सर जमाअत में उल्लेख होता है। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य विषय, जो आमतौर पर सामने नहीं आते, उनका संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा।

"तुर्की का भविष्य और मुसलमानों का कर्तव्य" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़िय-ल्लाहु अन्हु ने इस विषय पर 1919 में अपनी खलीफत के प्रारंभिक दिनों में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया था। जब तुर्की सरकार संकट में थी, तो आपने 18 सितंबर 1919 को यह पुस्तक लिखी, जिसमें आपने मुस्लिम एकता के हर अवसर का लाभ उठाने की बात कही। आपने उस समय यह महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत किया कि

"मेरे विचार में इस सभा का आधार केवल यह होना चाहिए कि एक मुस्लिम कहलाने वाली सल्तनत को समाप्त कर देना या उसे केवल राज्यों की स्थिति में सीमित कर देना एक ऐसा कार्य है, जिसे हर वह समुदाय, जो अपने आपको मुसलमान कहता है, नापसंद करता है और इस विचार से भी उसे ठेस पहुँचती है।"

इसके अतिरिक्त, आपने तुर्की सल्तनत और इस्लाम के केंद्र हिजाज़ के बारे में अपने मार्गदर्शन को स्पष्ट करते हुए लिखा

"अरबों की राष्ट्रीय चेतना जाग चुकी है और उनकी स्वतंत्रता की भावना प्रबल हो रही है... 1300 वर्षों के बाद वे पुनः अपनी सीमाओं के शासक बने हैं और अपने उत्तम प्रबंधन, न्याय और निष्पक्षता से उन्होंने अपने अधिकार को सिद्ध कर दिया है। उनके संबंध में कोई नई योजना सफल नहीं हो सकती और न ही कोई समझदार व्यक्ति इसे स्वीकार कर सकता है।"

तुर्की के सुधार के लिए आपने यह भी कहा कि "सिर्फ सभाएँ करने और व्याख्यान देने से काम नहीं चलेगा, न ही केवल धन इकट्ठा करके विज्ञापन और ट्रैक्ट प्रकाशित करने से... बल्कि एक संगठित संघर्ष की आवश्यकता है, जो इस कार्य को पूरे विश्व में फैलाने के लिए हो। यह बौद्धिक युग है।"

आप आगे लिखते हैं "आज का युग ज्ञान का युग है, और लोग हर बात के लिए तर्क मांगते हैं... इसलिए इस कठिन कार्य को पूरा करने के लिए एक व्यवस्थित योजना होनी चाहिए... निरर्थक प्रयास बुद्धिमानों का कार्य नहीं होता।"

यही बात आज के मुसलमानों को भी सोचनी चाहिए। उस समय यह केवल तुर्की सरकार का मुद्दा था, लेकिन आज मुसलमानों और अरब जगत को इससे अधिक गंभीरता से इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता है। केवल नारे लगाने और बैठकों से काम नहीं बनेगा, बल्कि ठोस कदम उठाने होंगे।

इस्लाम और मुसलमानों के प्रति घृणा और पूर्वाग्रह के कारण पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा :

"इस्लाम-विरोधी लोगों के दिलों में उनके पूर्वजों द्वारा इस्लाम के बारे में इतनी नकारात्मक धारणाएँ बैठा दी गई हैं कि वे इस्लाम को एक सामान्य धर्म नहीं समझते, बल्कि ऐसा मत समझते हैं, जो मनुष्य को मानवता से दूर कर देता है और उसे जंगली पशु बना देता है... अन्य धर्मों से उन्हें भय नहीं लगता, वे उन्हें केवल घृणास्पद मानते हैं, लेकिन इस्लाम से वे डरते हैं।"

आपने आगे स्पष्ट किया कि :

"वे इस्लाम की प्रगति को न केवल सभ्यता और शिष्टाचार के मार्ग में बाधा मानते हैं, बल्कि इसे मानवता के लिए भी हानिकारक समझते हैं।"

आज के समय में इस्लाम-विरोधी अभियान पहले से अधिक तेज़ी से चलाए जा रहे हैं। हर देश में, खासतौर पर दक्षिणपंथी (Right Wing) और अन्य इस्लाम के विरुद्ध योजनाबद्ध आंदोलन चला रहे हैं।

इस स्थिति को सुधारने के लिए आपने यह महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया "मुसलमान अपनी गलतियों से तौबा करें, अल्लाह की ओर लौटें, स्वयं इस्लाम को समझें और इसकी वास्तविकता से परिचित हों तथा दूसरों को भी इससे अवगत कराएँ, ताकि वर्तमान समय में मुसलमानों पर आने वाली बर्बादी और गिरावट समाप्त हो सके... यदि उन्होंने धर्म की खातिर इस्लाम का प्रचार नहीं किया, यदि अल्लाह के आदेशा-नुसार इस अनुपम शिक्षा को संसार के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया, तो अब कम से कम अपने जीवन को बचाने के लिए ही कुछ प्रयास करें... क्योंकि उनकी जीविका और इस्लाम का प्रचार, दोनों एक-दूसरे के लिए अनिवार्य हो गए हैं।"

("तुर्की का भविष्य," अनवारुल उलूम, खंड 4, पृष्ठ 16-18)

तो यही सिद्धांत आज भी मुसलमानों को अपनाने की आवश्यकता है। नहीं तो इस्लाम विरोधी दुनिया मुस्लिम देशों के चारों ओर घेरा तंग करती चली जाएगी और कर भी रही है।

फिर एक अवसर पैदा हुआ। ऑल मुस्लिम पार्टीज़ कॉन्फ्रेंस इस पर आपने "ऑल मुस्लिम पार्टीज़ कॉन्फ्रेंस के कार्यक्रम पर एक नज़र" के शीर्षक से दिशानिर्देश दिए। यह पैम्फलेट आपने ऑल इंडिया मुस्लिम पार्टीज़ कॉन्फ्रेंस की बैठक में प्रस्तुत करने के लिए 13 जुलाई 1925 को लिखा। सम्मेलन के आयोजकों की इच्छा थी कि अहमदिया जमाअत के इमाम स्वयं इसमें शामिल होकर अपने विचार व्यक्त करें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा कि मैं स्वयं इसमें शामिल होने में असमर्थ हूं, लेकिन अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत कर देता हूं। इस पैम्फलेट में आपने सबसे पहले इस्लाम की धार्मिक और राजनीतिक परिभाषा को स्पष्ट किया और बताया कि इस्लाम की एक धार्मिक परिभाषा है, जिसे हर कोई अपनी समझ के अनुसार परिभाषित कर सकता है। दूसरी इसकी राजनीतिक परिभाषा है कि राजनीतिक दृष्टि से कौन लोग मुसलमान हैं?

इसका उत्तर केवल हिंदू, ईसाई और सिख ही दे सकते हैं, जिनका मुसलमानों से राजनीतिक संबंध पड़ता है। क्योंकि यदि किसी समुदाय के अनुयायी स्वयं को मुस-लमान कहते और मानते हैं, तो चाहे दूसरे समुदाय के लोग उन्हें गैर-मुस्लिम ही क्यों न समझें, लेकिन राजनीति में जब हिंदू और सिख उनसे व्यवहार करेंगे, तो वे उन्हें एक ही समुदाय के रूप में देखेंगे और जो कार्रवाई वे एक समुदाय के खिलाफ करेंगे, वही दूसरी मुस्लिम समुदाय के खिलाफ भी होगी। "हर समुदाय को उन्होंने मुसलमान मानकर ही व्यवहार करना है।"

इसलिए राजनीतिक रूप से उनके हित एक समान हैं, और यदि मुसलमानों ने इस बात को नहीं समझा तो बाकी समुदाय उन्हें एक-एक कर के समाप्त कर देंगे। और जब उन्हें होश आएगा, तब तक कुछ भी करने का कोई लाभ नहीं होगा। इसीलिए आपने सभी मुस्लिम संप्रदायों के सामने यह स्वर्णिम सिद्धांत प्रस्तुत किया कि राज-नीतिक मामलों में मुसलमानों को पूर्ण एकता और एकजुटता का प्रदर्शन करना चाहिए। क्योंकि राजनीतिक दृष्टि से यदि आप किसी समुदाय को अलग कर देंगे, तो यह संभव नहीं कि वह अन्य समुदायों की ओर न झुके।

इसके बाद इस्लाम की उन्नति, प्रचार और उसके राजनीतिक सुदृढ़ीकरण के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए। आपने कहा कि इस्लाम की मजबूती के लिए आवश्यक है कि पूरे भारत में इस्लाम के प्रचार के लिए एक सुव्यवस्थित प्रणाली बनाई जाए और सभी प्रचार संगठनों के बीच सहयोग की कोई राह निकाली जाए। क्योंकि इस्लाम का अस्तित्व केवल प्रचार पर ही निर्भर करता है और इसके लिए एक पूर्ण प्रणाली स्थापित करने की आवश्यकता है। (और अब तो इसका कार्यक्षेत्र पूरी दुनिया में फैल चुका है।)

इसके अतिरिक्त, मुसलमानों की औद्योगिक और शैक्षिक उन्नति के लिए नियमित विभाग स्थापित किए जाएं। हर विभाग का एक निश्चित उद्देश्य हो और वर्ष के अंत में बताया जाए कि उस लक्ष्य को कितनी हद तक पूरा किया गया है। अब तो यह इस्लाम की बड़ी-बड़ी सरकारों का कार्य है।

इसके अतिरिक्त, तत्काल एक ऐसी समिति की स्थापना भी आवश्यक है, जो इस बात का अध्ययन करे कि मुसलमानों को अन्य समुदायों के प्रभाव से कैसे मुक्त किया जा सकता है और जीवन के कौन-कौन से क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें विशेषज्ञ मुसलमानों की संख्या बहुत कम है। फिर वह समिति इस कमी को पूरा करने का प्रयास करे।

इसी प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुस्लिम बैंक की स्थापना की आवश्यकता पर भी जोर दिया और कहा कि यदि बिना ब्याज की कोई व्यवस्था हो सकती है जो कि संभव है तो हमारी जमाअत भी इसमें शामिल होने के लिए तैयार है। आपने 'बैतुल माल' और 'मुस्लिम चैंबर ऑफ कॉमर्स' की स्थापना का भी सुझाव दिया।

इसके अतिरिक्त, जहां गैर-मुस्लिम सरकारें हैं, वहां आपराधिक मामलों को छोड़कर मुसलमानों के अन्य विवादों को अदालतों में ले जाने की बजाय आपसी समझौते से निपटाने के लिए पंचायती प्रणाली स्थापित करने की भी आवश्यकता पर जोर दिया।

आपने फ़रमाया कि शांति की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि एक--दूसरे के धार्मिक मामलों में दखल न दिया जाए। दूसरों को उनके विश्वास के अनुसार कार्य करने दिया जाए और स्वयं अपने विश्वास के अनुसार कार्य किया जाए।

आपने व्यापार और उद्योग के बारे में कहा कि व्यापार एक ऐसा क्षेत्र है जिसे मुसलमानों ने सबसे अधिक नज़रअंदाज किया है और व्यापारिक दृष्टि से वे हिंदुओं के अधीन हो गए हैं। उस समय भी ऐसा ही था। अब हम देख रहे हैं कि दुनिया के बड़े-बड़े अमीर लोग, जो विभिन्न धर्मों से संबंधित हैं चाहे वे यहूदी हों, ईसाई हों या कोई और वे व्यापार में आगे हैं और मुसलमान उनके अधीन हो चुके हैं। उस समय भी यही स्थिति थी, और आज भी हम दुनिया की सरकारों और व्यापारियों के अधीन होते जा रहे हैं, जैसा कि मैंने पहले कहा। इसलिए इस दिशा में मुस्लिम सरकारों को ध्यान देने की आवश्यकता है।

व्यापार और उद्योग में भी मुसलमानों की उन्नति के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

अंत में, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसलमानों के आपसी विवादों को समाप्त कर एकता और भाईचारे की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि मैं अपने लेख को इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करते हुए समाप्त करता हूँ कि सारी मेहनत व्यर्थ जाएगी और सारी योजनाएँ निष्फल हो जाएँगी यदि इस बात को भली-भांति न समझा गया कि हम एक-दूसरे को चाहे काफ़िर कहें, लेकिन बाहरी दुनिया की नज़रों में हम सभी मुसलमान हैं, और एक का नुकसान दूसरे का नुकसान है।

इसलिए राजनीतिक क्षेत्र में हमें धार्मिक फ़तवों को नज़रअंदाज कर देना चाहिए क्योंकि वे इस क्षेत्र से बाहर हैं। इस्लाम बिल्कुल भी यह नहीं कहता कि अपनी राजनीतिक आवश्यकताओं के लिए उन लोगों के साथ मिलकर काम नहीं कर सकते जिन्हें आप मुसलमान नहीं समझते। अगर पैगंबर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुश्रिकों के ख़िलाफ़ यहूदियों से समझौता किया था, तो कोई कारण नहीं कि खुद को मुसलमान कहने वाले विभिन्न संप्रदाय इस्लाम की राजनीतिक श्रेष्ठता, बल्कि कहें कि उसकी राजनीतिक सुरक्षा के लिए, आपस में मिलकर कार्य न कर सकें।

यदि हम इस अवसर पर एकता स्थापित नहीं कर सके, तो यह निश्चित रूप से साबित होगा कि हमारा मतभेद इस्लाम के लिए नहीं, बल्कि व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए है। यह हमारे अहंकार के कारण है। अल्लाह हमें इस दुर्भाग्य से बचाए।

(स्रोत: "ऑल मुस्लिम पार्टीज़ कॉन्फ्रेंस के कार्यक्रम पर एक नज़र", अनवारुल उलूम, खंड 9, पृष्ठ 8-10)

पाकिस्तान और कुछ अन्य मुस्लिम देशों में आज भी यही स्थिति बनी हुई है। विशेष रूप से अहमदियों को काफ़िर मानने की मानसिकता प्रबल है, जबकि हर संप्रदाय दूसरे को भी काफ़िर कहता है। यही मानसिकता ग़ैर-मुस्लिम दुनिया में इस्लाम की नकारात्मक छवि बना रही है और मुसलमानों को नुकसान पहुँचा रही है।

इसलिए आज भी मुस्लिम सरकारों और समुदायों को इस पहलू को समझने की आवश्यकता है।

भारत की परिस्थितियों के संबंध में : जब भारत और पाकिस्तान एक थे, उस समय एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ था, जिसमें मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का प्रश्न उठा था। ब्रिटिश सरकार ने भारत की स्वतंत्रता का मूल्यांकन करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया था, जिसे हर दस वर्षों में यह आकलन करना था कि लोगों को कितने अधिकार दिए जा सकते हैं ताकि वे स्वतंत्र सरकार स्थापित कर सकें।

इस आयोग के पहले अध्यक्ष एक अंग्रेज़ बैरिस्टर थे, जिनका नाम सर जॉन साइमन था।

(स्रोत: "मुसलमानाने-हिंद के इम्तिहान का वक़्त", अनवारुल उलूम, खंड 10, पृष्ठ 2-3)

बहरहाल, इस आयोग और उसके फैसलों पर विभिन्न समयों में बहस होती रही और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने समय-समय पर मार्गदर्शन देते हुए अपने विस्तृत विचार प्रस्तुत किए तथा मुसलमानों का नेतृत्व किया।

इसी सिलसिले में एक गोलमेज सम्मेलन हुआ, जिसकी चर्चा हमारे ऐतिहासिक संदर्भों में मिलती है। "ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित साइमन कमीशन की रिपोर्ट भारतीयों की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरी, इसलिए वह उन्हें स्वीकार्य नहीं थी। ऐसी परिस्थितियों में, सरकार ने गोलमेज सम्मेलन आयोजित करने की घोषणा की।"

इसका उद्देश्य यह था कि ब्रिटेन और भारत के प्रतिनिधि एक साथ बैठकर भारत की राजनीतिक प्रगति पर विचार कर सकें। इस अवसर पर, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसलमानों का मार्गदर्शन करने के लिए तत्काल एक लेख लिखा और उन्हें यह सलाह दी कि वे आपसी मतभेद और विभाजन को समाप्त करें तथा राष्ट्रीय हित में एकता और सहयोग से कार्य करें। केवल इसी तरीके सेवे विरोधी समुदायों का सामना कर अपने अधिकारों को सुरक्षित कर सकते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि सम्मेलन में ऐसे प्रतिनिधि भेजने का प्रयास करें जो वास्तव में समुदाय का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हों। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सरकार को भी यह परामर्श दिया कि राजनीतिक दलों के परामर्श से प्रतिनिधियों का चयन किया जाए, ताकि सम्मेलन के निर्णयों को लोग खुले दिल से स्वीकार कर सकें।

मुसलमानों के अधिकारों की सुरक्षा के संबंध में उन्होंने कहा:

"मेरे विचार में, अब ऑल मुस्लिम पार्टीज़ सम्मेलन के लिए कार्य करने का समय आ गया है। केवल यह प्रकाशित कर देना कि मुसलमानों की ये मांगें हैं, पर्याप्त नहीं है। यदि ऐसे लोग गोलमेज सम्मेलन में भेजे गए जिन्होंने इन मांगों की अनदेखी की, तो मुस्लिम सम्मेलन के निर्णयों का कोई मूल्य नहीं रहेगा। यही समय है कि एक ओर सरकार को गलत चयन के बुरे परिणामों से आगाह किया जाए और दूसरी ओर जनता को इसके खतरों से अवगत कराया जाए। जब तक मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का निर्णय उनके द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों और उनकी प्रमुख राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से नहीं होता, तब तक चैन से न बैठा जाए।"

(स्रोत: "गोलमेज सम्मेलन और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व", अनवारुल उलूम, खंड 11, पृष्ठ 13-14)

उस समय के राजनीतिक हालात और उनके समाधान उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति के समाधान के लिए, आपने एक विस्तृत लेख लिखा जिसमें उस समय की परिस्थितियों का व्याख्यान किया गया।

"साइमन कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित होने के कुछ समय बाद," ब्रिटिश सरकार ने लंदन में गोलमेज सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया ताकि भारत की राजनीतिक प्रगति के विभिन्न पहलुओं पर विचार कर भविष्य के लिए एक कार्य योजना तैयार की जा सके। चूँकि साइमन कमीशन ने मुसलमानों के अधिकारों को पूरी तरह से ध्यान में नहीं रखा था , इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को इस पर चिंता थी। वे चाहते थे कि भविष्य में मुसलमानों के अधिकारों की अनदेखी न की जाए।

इसलिए उन्होंने उचित समझा कि इस अवसर पर साइमन कमीशन की रिपोर्ट की समीक्षा की जाए, उसकी कमियों को उजागर किया जाए और भारत की समस्याओं का ऐसा समाधान प्रस्तुत किया जाए जिससे भविष्य में सभी समुदाय शांति और सौहार्द के साथ जीवन व्यतीत कर सकें।

उन्होंने कहा: "मैं समझता हूँ कि धार्मिक व्यक्ति होने के नाते, मेरा राजनीति से उतना गहरा संबंध नहीं है जितना उन लोगों का है जो दिन-रात इन्हीं कार्यों में लगे रहते हैं। लेकिन इसी कारण से मुझ पर शांति और सौहार्द स्थापित करने की अधिक ज़िम्मेदारी आती है। मैं यह भी महसूस करता हूँ कि राजनीतिक उथल-पुथल से अलग रहने के कारण, मैं शायद कुछ मुद्दों को उन लोगों की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकता हूँ, जो इस संघर्ष में किसी न किसी पक्ष से जुड़े हुए हैं। इसलिए जब गोलमेज सम्मेलन की घोषणा के कारण लोगों का ध्यान भारत की समस्या के समाधान पर केंद्रित है, तो मैं इसे उपयुक्त समझता हूँ कि अपने विचार दोनों देशों के निष्पक्ष लोगों के समक्ष रखूँ।"

इस समीक्षा में उन्होंने मुसलमानों के अधिकारों और उनकी मांगों पर व्यापक चर्चा की और उनकी न्यायसंगतता को उजागर किया। इसके साथ ही, उन्होंने भारत की राजनीतिक समस्याओं का एक संतुलित और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत

किया।

इस विस्तृत समीक्षा का अंग्रेज़ी संस्करण तत्काल प्रकाशित कर इंग्लैंड भेजा गया ताकि गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने वाले लोग इसे पढ़कर लाभ उठा सकें।

इससे मुसलमान प्रतिनिधियों को विशेष रूप से लाभ पहुँचा। पहली बार उन्होंने एकजुट होकर सम्मेलन में अपने अधिकारों की माँग प्रस्तुत की, जिसका इंग्लैंड के बुद्धिजीवियों और नीति-निर्माताओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने भारत में मुसलमानों की विशेष स्थिति को स्वीकार करते हुए उनके अधिकारों की न्यायसंगतता को मान्यता दी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की यह पुस्तक भारत और इंग्लैंड दोनों में अत्यधिक लोकप्रिय हुई, और इसे बड़े ध्यान और रुचि के साथ पढ़ा गया। कई राजनीतिक विचारकों और पत्रकारों ने उनकी प्रशंसा में भव्य शब्दों का प्रयोग किया।

(स्रोत: "भारत की वर्तमान राजनीतिक समस्या का समाधान", अनवारुल उलूम, खंड 11, पृष्ठ 18-19)

अहमदियत के इतिहास में कई घटनाएँ दर्ज हैं। जैसा कि मैंने कहा, यह टिप्पणी दोनों समुदायों में बहुत लोकप्रिय हुई। इसे बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ा गया, और इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

लॉर्ड मेस्टन (Meston), जो पहले यूपी के गवर्नर थे, कहते हैं, "मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे अहमदिया जमाअत के इमाम की अत्यंत रोचक रचना भेजी।" वे इसे भेजने वाले को लिखते हैं, "मैंने इससे पहले भी उनकी कुछ रचनाएँ रुचि से पढ़ी हैं। मुझे आशा है कि इस पुस्तक को पढ़ना मेरे लिए प्रसन्नता और लाभ का कारण बनेगा।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 214)

लेफ्टिनेंट कमांडर केनवर्दी (Kenworthy), जो संसद सदस्य थे, कहते हैं, "भारत की राजनीतिक समस्या के समाधान पर लिखी गई इस पुस्तक को भेजने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मैंने इसे अत्यंत रुचि के साथ पढ़ा है।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 214)

सर मैलकम हेली (Malcolm Hailey), जो यूपी के गवर्नर और पंजाब के पूर्व गवर्नर रह चुके थे, लिखते हैं, "(लंदन की मस्जिद के इमाम) इस पुस्तक के लिए, जो आपने अहमदिया जमाअत के इमाम की ओर से मुझे भेजी है, मैं आपका अत्यंत आभारी हूँ। मैं अहमदिया जमाअत की गतिविधियों से भली-भाँति परिचित हूँ और उसकी भावना को समझता हूँ। मैं उसकी कद्र करता हूँ कि वह भारत की महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान के लिए प्रयासरत है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक मेरे लिए लाभदायक होगी और मैं इसे बड़ी रुचि से पढ़ूँगा।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 215)

इसके बाद सर होन ओ. मिलर (Sir Hone O. Millar) कहते हैं, "इस छोटी-सी पुस्तक को भेजने के लिए, जिसमें भारत की समस्या के समाधान को लेकर अहमदिया जमाअत के इमाम के सुझाव दर्ज हैं, मैं तहे दिल से आपका धन्यवाद करता हूँ।

साइमन कमीशन की सिफारिशों पर यह एकमात्र विस्तृत आलोचना है, जो मेरी नजर से गुजरी है।

मैं उन विवरणों पर कोई टिप्पणी नहीं करूँगा, जिन पर मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन मैं इस बात की सराहना करता हूँ कि हिज होलीनेस (अहमदिया जमाअत के इमाम) ने कितनी ईमानदारी, तर्कसंगतता और स्पष्टता से अपने समुदाय के विचारों को व्यक्त किया है। मैं हिज होलीनेस हज़रत मिर्जा बशीरुद्दीन की दूरदृष्टि से अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 215)

इसके बाद, माननीय पीटरसन (Peterson), CSI, CIE लिखते हैं, "भारत की राजनीतिक समस्या के समाधान पर लिखी पुस्तक को भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। अभी तक इसे पूरा पढ़ने का समय नहीं मिला, लेकिन जितना पढ़ा है, उससे यह स्पष्ट होता है कि यह रचना वर्तमान जटिलताओं को सुलझाने के लिए एक दिलचस्प और मूल्यवान प्रयास है। इसमें मुसलमानों का दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। उम्मीद है कि जल्द ही आपसे मुलाकात होगी।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 217)

डॉ. ज़ियाउद्दीन, जो अलीगढ़ से थे, कहते हैं, "मैंने आपकी पुस्तक अत्यंत रुचि के साथ पढ़ी। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इसे यूरोप में अधिक से अधिक प्रकाशित करें। प्रत्येक संसद सदस्य को इसकी एक प्रति अवश्य भेजी जाए और इंग्लैंड के हर समाचार पत्र के संपादक को भी एक प्रति प्रेषित की जाए। भारत की तुलना में इंग्लैंड में इस पुस्तक के अधिक प्रसार की आवश्यकता है। आपने इस्लाम की एक महत्वपूर्ण सेवा अंजाम दी है।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 218)

अब ये गैर-अहमदिया लोग लिख रहे हैं कि "इस्लाम की सेवा अंजाम दी गई है," और यहाँ कुछ गैर-अहमदिया लोग अहमदियों को गैर-मुस्लिम कहते हैं।

सेठ हाजी अब्दुल्ला हारून, जो एमएलए कराची थे, कहते हैं, "मेरी राय में राजनीति के विषय में जितनी भी पुस्तकें भारत में लिखी गई हैं, उनमें 'भारत की राजनीतिक समस्या का समाधान' सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक है।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 218)

प्रसिद्ध विद्वान डॉ. सर मोहम्मद इकबाल लिखते हैं, "टिप्पणी के कुछ अंशों का मैंने अध्ययन किया है, यह अत्यंत उत्कृष्ट और व्यापक है।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 218)

लाहौर के अख़बार *इंक़लाब* ने लिखा, "जनाब मिर्जा साहब ने इस टिप्पणी के माध्यम से मुसलमानों की बहुत बड़ी सेवा की है। यह कार्य बड़ी-बड़ी इस्लामी संस्थाओं को करना चाहिए था, जिसे मिर्जा साहब ने अंजाम दिया।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 218)

लाहौर के अख़बार 'सियासत' ने लिखा:

"अगर धार्मिक मतभेदों को एक तरफ रख दिया जाए, तो जनाब मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने लेखन और साहित्य के क्षेत्र में जो काम किया है, वह न केवल विशालता बल्कि उपयोगिता की दृष्टि से भी हर प्रकार की प्रशंसा का पात्र है। राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने अपनी जमाअत को आम मुसलमानों के साथ समानांतर रूप से आगे बढ़ाने के लिए जिस कार्यनीति की नींव रखी और अपने नेतृत्व में उसे सफल बनाया, वह हर निष्पक्ष मुसलमान और सच्चे इंसान से सराहना प्राप्त किए बिना नहीं रह सकती। उनकी राजनीतिक सूझबूझ का एक युग गवाह है।"

"नहरू रिपोर्ट के खिलाफ मुसलमानों को संगठित करने, साइमन कमीशन के समक्ष मुसलमानों का दृष्टिकोण रखने, समकालीन समस्याओं पर इस्लामी दृष्टिकोण से तार्किक बहस करने और मुसलमानों के अधिकारों पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन करने के माध्यम से उन्होंने बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है। इस चर्चा में शामिल पुस्तक साइमन रिपोर्ट पर उनकी आलोचना है, जो अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई है। इसके अध्ययन से उनकी ज्ञान की व्यापकता का अनुमान लगाया जा सकता है। उनकी भाषा अत्यंत सरल और प्रभावशाली होती है, और उनकी शैली बहुत ही परिष्कृत है।"

(तारीखे अहमदियत, खंड 5, पृष्ठ 219)

फिर कुछ और टिप्पणियाँ 'दुनिया की वर्तमान अशांति का इस्लाम क्या समाधान प्रस्तुत करता है?'

इस विषय पर भी आपने लेख लिखा। वैश्विक शांति के विषय पर :

9 अक्टूबर 1946 को, शाम 5:30 बजे, दिल्ली के 8 पार्क रोड के एक विशाल प्रांगण में हज़रत खलीफा तुल मसीह II ने इस्लामी दृष्टिकोण से वैश्विक शांति पर एक गहन भाषण दिया। इस भाषण को सुनने के लिए सैकड़ों ग़ैर-अहमदी और ग़ैर-मुस्लिम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए और उन्होंने अत्यंत ध्यानपूर्वक इसे सुना। यह भाषण पहली बार 15 अप्रैल 1961 को *अल-फ़ज़ल* में प्रकाशित हुआ।

दिल्ली के अख़बार 'तेज' ने अपनी 14 अक्टूबर 1946 की प्रकाशित रिपोर्ट में लिखा:

"अहमदियों के इमाम, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ने भाषण में बताया कि शांति और स्थिरता का प्रश्न उतना ही पुराना है जितना स्वयं मानवता, क्योंकि यह मानव प्रकृति से गहरा संबंध रखता है। यदि शांति की स्थापना करनी है, तो शत्रुता और द्वेष की भावना को समाप्त करना होगा। यह केवल एक राजनीतिक मुद्दा नहीं, बल्कि नैतिक समस्या भी है। यदि हम ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करें और लालच एवं स्वार्थ को छोड़ दें, तो हमारे भीतर द्वेष और लोभ के स्थान पर भाईचारे और प्रेम की भावना जन्म ले सकती है।*

"धार्मिक दुनिया के मतभेद समाप्त हो सकते हैं, बशर्ते कि हम एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना सीखें और अपने भीतर सहनशीलता विकसित करें। ठीक वैसे ही जैसे धार्मिक मामलों में धैर्य आवश्यक है, संसारिक मामलों में भी इसकी आवश्यकता होती है।"

"हमें जातीय और रंगभेद के झगड़ों को समाप्त कर वैश्विक भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना चाहिए।"

(स्रोत: *दुनिया की वर्तमान अशांति का इस्लाम क्या समाधान प्रस्तुत करता है? अनवारुल उलूम, खंड 18, पृष्ठ 11-12)

'हमारा कर्तव्य है कि हम पीड़ित समुदाय की सहायता करें, चाहे वे हमें कष्ट दें या

नुकसान पहुँचाएँ'

दिल्ली के एक अख़बार ने लिखा कि अहमदी पाकिस्तान का समर्थन कर रहे हैं, जबकि अन्य मुसलमानों ने उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। अख़बार ने यह भी टिप्पणी की कि जब पाकिस्तान बन जाएगा, तो मुसलमान उनके साथ वही करेंगे जो पहले काबुल में हुआ था, और उस समय अहमदी कहेंगे कि हमें भारत में शामिल कर लो।

इस टिप्पणी पर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ने 16 मई 1947 को नमाज़-ए-मग़रिब* के बाद प्रतिक्रिया दी। आपने कहा:

"हमारा कर्तव्य है कि हम पीड़ित समुदाय की सहायता करें, चाहे वे हमें कष्ट पहुँचाएँ या हम पर अत्याचार करें।"

इसके अतिरिक्त, आपने यह भी कहा: *"यदि हमारा दुश्मन हमारे साथ अन्याय और अत्याचार भी करे, तब भी हमें न्याय और निष्पक्षता से काम लेना चाहिए।"

आपका यह भाषण क़ादियान में पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया गया।

(स्रोत: *हमारा कर्तव्य है कि हम पीड़ित समुदाय की सहायता करें, चाहे वे हमें कष्ट दें या नुकसान पहुँचाएँ।* अनवारुल उलूम, खंड 18, पृष्ठ 19)

आजकल भी कुछ लोग यह सवाल उठाते हैं कि मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पाकिस्तान में शामिल होने का समर्थन क्यों किया था। तो यह भाषण उसका उत्तर है। उस समय के हालात में मुसलमानों की मदद की आवश्यकता थी और जमाअत हमेशा मुसलमानों की सहायता के लिए अग्रिम पंक्ति में रही है।

मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बात से इनकार नहीं किया कि जमाअत पर यह अन्याय नहीं होगा। आपने फ़रमाया कि चाहे जो भी हो, उस समय मुसलमानों को सहायता की आवश्यकता थी और अहमदियों को उनका साथ देना चाहिए क्योंकि हमें मुसलमानों का साथ देना है।

पाकिस्तान के भविष्य के बारे में व्याख्यान मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के बाद पंजाब की राजधानी लाहौर में "पाकिस्तान का भविष्य" विषय पर दूरदर्शी व्याख्यान दिए, जिनमें लाहौर के बड़े-बड़े विद्वान, स्कॉलर और शिक्षित लोग शामिल हुए और उन्होंने इन व्याख्यानों को सराहा। पहले पाँच व्याख्यान मेनार्ड हॉल, लाहौर में हुए और छठा व्याख्यान यूनिवर्सिटी हॉल, लाहौर में दिया गया।

कहा जाता है कि प्रस्तुत व्याख्यान, जो 7 दिसंबर 1947 को मेनार्ड हॉल, लाहौर में दिया गया, समय की कमी के कारण कुछ महत्वपूर्ण बातें पूरी तरह नहीं बताई जा सकीं। इसलिए मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस विषय को अपनी याददाश्त के आधार पर विस्तार से लिखकर आम जनता के लाभ के लिए "अल-फज़ल" में प्रकाशित करवाया, जो 9 दिसंबर 1947 को लाहौर से प्रकाशित हुआ।

इस भाषण में आपने पाकिस्तान को वनस्पति, कृषि, पशुपालन और आध्यात्मिक संसाधनों के दृष्टिकोण से कैसे विकसित किया जा सकता है, इसके सुनहरे सिद्धांत प्रस्तुत किए, सुझाव दिए और मार्गदर्शन दिया। (संदर्भ: "पाकिस्तान का भविष्य", अनवारुल उलूम, खंड 19, पृष्ठ 8) यह व्याख्यान अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ।

इस्लामी संविधान या इस्लामी बुनियादी कानून इस विषय पर भी आपने अपने विचार प्रकट किए। क़ादियान से लाहौर हिजरत के बाद पाकिस्तान के भविष्य पर दिए गए व्याख्यानों में यह अंतिम व्याख्यान था, जिसे आपने यूनिवर्सिटी हॉल, लाहौर में "इस्लामी संविधान या इस्लामी बुनियादी कानून" के विषय पर दिया। यह व्याख्यान आम जनता के लाभ के लिए 18 फरवरी 1948 को एक पंफलेट के रूप में प्रकाशित किया गया और अब भी "अनवारुल उलूम" के खंड 19 में मौजूद है।

इस भाषण में आपने इस्लामी संविधान की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया कि पाकिस्तान में किस प्रकार का संविधान या कानून लागू होना चाहिए। आपने फ़रमाया:

*"यदि पाकिस्तान के संविधान में मुसलमान, जिनकी भारी बहुमत होगी, यह कानून पारित कर दें कि पाकिस्तान के क्षेत्र में मुसलमानों के लिए क़ुरआन और सुन्नत के अनुसार कानून बनाए जाएंगे और इसके विपरीत कोई कानून बनाना अवैध होगा, तो भले ही सरकार पूर्ण रूप से इस्लामी न हो सके क्योंकि यह संभव नहीं, लेकिन सरकार का कार्य प्रणाली इस्लामी हो जाएगी और मुसलमानों के लिए इसका कानून भी इस्लामी हो जाएगा और इसी की मांग इस्लाम करता है। इस्लाम कभी यह नहीं कहता कि हिंदू, ईसाई और यहूदी को इस्लाम पर जबरन चलाया जाए, बल्कि वह इसके बिल्कुल खिलाफ है।"

(संदर्भ: "इस्लामी संविधान या इस्लामी बुनियादी कानून", अनवारुल उलूम, खंड 19, पृष्ठ 10-11)

इस्लाम हर धर्म और हर व्यक्ति को स्वतंत्रता प्रदान करता है। आज लोग कहते हैं कि एक इस्लामी देश में इस्लामी संविधान और कानून है। इसकी शुरुआत और सुझाव तो मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही दिया था। लेकिन व्यवहार में इस्लाम के नाम पर अन्याय किया जा रहा है, जबकि आपने इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार संविधान बनाने और उसे लागू करने की ओर ध्यान दिलाया था।

अगर अहमदियों को इस्लाम के विरोधी समझा जाता, जैसा कि आज के कुछ मौलवी कहते हैं, तो फिर इस सलाह और मार्गदर्शन की आवश्यकता ही क्यों पड़ती?

बहरहाल, आज देश को कुछ कट्टरपंथी तत्वों ने अपने चंगुल में लेने की कोशिश की हुई है। अल्लाह तआला देश में कोई ऐसा सुलझा हुआ व्यक्ति पैदा करे जो इन गलत योजनाओं से देश को छुटकारा दिलाए और देश को विकास की राह पर अग्रसर करे।

पाकिस्तान: उस इस्लामी इमारत की एक ईंट जिसे हमें दुनिया में स्थापित करना है।

यह भाषण आपने टाउन हॉल, क्वेटा में दिया था। मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पाकिस्तान बनने के तुरंत बाद पाकिस्तान के भविष्य पर लाहौर में छह व्याख्यान दिए थे, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।

इसके कुछ समय बाद आपने पश्चिमी पाकिस्तान के अन्य प्रमुख शहरों का दौरा किया और हजारों पाकिस्तानियों को "स्थायित्व पाकिस्तान" के विषय पर अपने दूरदर्शी विचारों और निर्माणशील सोच से अवगत कराया।

जून 1948 में आपने क्वेटा का दौरा किया और वहाँ अत्यंत ज्ञानवर्धक और आध्यात्मिक रूप से प्रेरणादायक सार्वजनिक भाषण दिए। इनमें पाकिस्तान के समक्ष आने वाली प्रमुख राष्ट्रीय समस्याओं पर पाकिस्तानी जनता का मार्गदर्शन किया और अत्यंत विस्तार से उन्हें उनकी राष्ट्रीय और धार्मिक जिम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाया।

अपने जोशीले और प्रेमपूर्ण शब्दों के माध्यम से आपने अटूट आस्था और अदम्य साहस के साथ हजारों निराश और दुखी दिलों में नई ऊर्जा और आशा की भावना फूंक दी।

यह भाषण मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने 4 जुलाई 1948 को टाउन हॉल, क्वेटा में "पाकिस्तान और उसका भविष्य" विषय पर दिया था। यह मार्च 1952 में "अल-फज़ल" में प्रकाशित हुआ और इसका लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

(संदर्भ: "पाकिस्तान: उस इस्लामी इमारत की एक ईंट जिसे हमें दुनिया में स्थापित करना है", अनवारुल उलूम, खंड 19, पृष्ठ 19)

पाकिस्तान की तरक्की और उसके स्थायित्व के संबंध में सुनहरी नसीहतें

11 नवंबर 1949 को, जमाअत अहमदिया सरगोधा ने कंपनी बाग में एक सार्वजनिक जलसा आयोजित किया था। उस समय जलसे किए जा सकते थे, लेकिन अब तो हम अपने प्रशिक्षण जलसे भी नहीं कर सकते। यह जलसा इस लिहाज से खास था कि इसमें पहली बार हज़रत खलीफ़तुल मसीह II रज़ियल्लाहु अन्हु ने सरगोधा और आसपास के हजारों अहमदियों और गैर-अहमदियों को अपनी कीमती नसीहतों और हिदायतों से लाभान्वित किया। उन्होंने इस्लामी शिक्षाओं पर अमल करने और पाकिस्तान को अधिक से अधिक मजबूत बनाने की ओर खूबसूरत अंदाज में ध्यान दिलाया।

हज़रत खलीफ़ातुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की तकरीर पूरी दिलचस्पी और ध्यान से सुनी गई। उन्होंने पाकिस्तान की सुरक्षा और स्थायित्व पर जोर देते हुए कहा:

"हमने खुद अल्लाह से दुआ की थी कि ऐ खुदा! हमें यह मुल्क दे। अब इसे सही तरीके से क़ायम रखना और इसे तरक्की देना हमारे हाथ में है। अगर हम अपने फर्ज़ नहीं समझेंगे, तो हमें इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। अल्लाह तआला हमसे पूछेगा कि मैंने तुम्हारी मांग पर तुम्हें यह मुल्क दिया, लेकिन तुमने इसे बर्बाद कर दिया।"

आजकल यही मौलवी इसे बर्बाद करने में लगे हुए हैं। पाकिस्तान की आमदनी बढ़ाने के लिए आपने समाज के सभी वर्गों को ईमानदारी से अपने टैक्स अदा करने और युवाओं को अधिक से अधिक सेना में भर्ती होने की नसीहत दी। उन दिनों अखबारों में यह चर्चा थी कि पाकिस्तान की सरकार इस्लामी शासन स्थापित करने के लिए कुछ नहीं कर रही। हमने तो पाकिस्तान इस्लाम के लिए मांगा था। इस विषय पर आपने दूरदर्शी बयान दिए और अंत में फ़रमाया:

"सिर्फ नारे लगाना किसी भी क़ौम की कामयाबी की निशानी नहीं होती। अगर इस वक्त सारे लोग नारा-ए-तकबीर बुलंद करने लग जाएं, अगर इस वक्त सब यह कहने लग जाएं कि पाकिस्तान जिंदाबाद, हिंदुस्तान मुर्दाबाद, तो इससे हिंदुस्तान की

एक चुहिया भी नहीं मरेगी।" सिर्फ नारे से कुछ भी नहीं होगा। "लेकिन अगर सब लोग उन बातों पर अमल करने लग जाएं जिनका अभी मैंने जिक्र किया है," यानी जो तकरीर में बयान किया गया, "तो ताजिर (व्यापारी) टैक्स देने लग जाएं, आम लोग बिना टिकट के रेल में सफर न करें, नौजवान बेहूदा बातों में अपना वक्त बर्बाद करने की बजाय तालीम में तरक्की करें, और जो मजबूत नौजवान हैं वे फौज में भर्ती हों, अफसर रिश्वतखोरी की आदत छोड़ दें और हर काम ईमानदारी और मेहनत से करें, तो पाकिस्तान अमली तौर पर मजबूत होता चला जाएगा।"

लेकिन आजकल तो पहले से भी ज़्यादा बुरे हालात हो गए हैं। फिर आपने फ़रमाया: "फिर तुम एक दफा भी पाकिस्तान जिंदाबाद न कहो, लेकिन नतीजा यही निकलेगा कि पाकिस्तान जिंदाबाद।" यानी चाहे कोई नारा लगाए या न लगाए, अगर अमल सही हो, तो पाकिस्तान की तरक्की और मजबूती का सबूत खुद मिल जाएगा।

सैन्य लेख बहुत सारे सैन्य विषयों पर भी आपने लिखा। "रूस और मौजूदा जंग" के हवाले से एक उदाहरण दिया गया है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रूस का पोलैंड में दाखिल होना इस पर आपका यह तजज़िया था:

"जब रूस पोलैंड में दाखिल हुआ, तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह लेख लिखा, जो 21 सितंबर 1939 के 'अल-फज़ल' अखबार में प्रकाशित हुआ। आपने इसमें रूस के पोलैंड में दाखिले के कारणों और उद्देश्यों का विश्लेषण करते हुए कहा कि रूस पोलैंड को तकसीम (विभाजित) करना चाहता है। उसकी नीयत सही नहीं लगती। उसने जर्मनी से गठजोड़ कर लिया है और अपनी फौजें पोलैंड भेजने पर अड़ा हुआ है, ताकि जर्मनी को पोलैंड पर कब्ज़ा करने में आसानी हो और बिना खून-खराबे के पोलैंड की सरकार खत्म हो जाए। अगर यह तरीका काम न करे, तो इस समझौते के तहत जर्मनी पोलैंड पर हमला कर दे। अगर दूसरी क़ौमें दखल न दें, तो ठीक, वरना जर्मनी पोलैंड को कुचल देगा और रूस व जर्मनी मिलकर इसे बांट लेंगे।"

इसके अतिरिक्त, आपने इस जंग के बाद के हालात पर भी रोशनी डाली और अपनी दूरदर्शिता से सहयोगी देशों को महत्वपूर्ण सलाह दी। और ये सलाह इतनी अहम थीं कि पोलैंड बच गया।

अंतरराष्ट्रीय मामलों पर गहरी नज़र

जैसा कि मैंने कहा, हज़रत खलीफा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की अंतरराष्ट्रीय मामलों पर भी गहरी नज़र थी। इस संबंध में आपके और भी कई लेख मौजूद हैं।

दीन (धर्म) से जुड़ा साहित्य, खासतौर पर कुरान की व्याख्या, बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है। आपके जुमे के खुतबे (शुक्रवार के उपदेश) और जमाअती जलसों में की गई तकरीरें इल्म और समझ का एक खजाना हैं।

पहले, 'तफसीर-ए-कबीर' की 10भागें थीं, लेकिन आपके नोट्स से इसमें और सामग्री जोड़ी गई, जिससे यह 15भागों में प्रकाशित हुई। अब इसमें विषयों को और अधिक विस्तार से पेश किया गया है। कुछ अन्य सूरतों की व्याख्या से जुड़े नोट्स भी मिले हैं, जिनकी समीक्षा की जा रही है। ऐसा संभव है कि जब ये प्रकाशित हों, तो इसकी 30भागें बन जाएं, क्योंकि यह लगभग 30,000 पृष्ठों का काम है।

अल्लाह तआला ने हज़रत मौऊद अलैहिस्सलाम से जो वादा किया था, वह हर पहलू से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु में पूरा होता नज़र आता है।

हमें चाहिए कि हम आपके ज्ञान और समझ से भरे इस साहित्य को पढ़ने की कोशिश करें। इसमें बहुत सारी बातें ऐसी हैं, जो आज के हालात पर भी लागू होती हैं और हमें इनसे लाभ उठाना चाहिए।

अल्लाह तआला हमें इस पर अमल करने की तौफीक दे।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई भी अमल या बयान वही से खाली नहीं होता, चाहे वह वही मुजमल हो या मुफ़स्सल, छुपी हो या ज़ाहिर, बिलकुल स्पष्ट हो या थोड़ा उलझा हुआ। यहाँ तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निजी और घरेलू मामलात, उनके खाने-पीने, पहनावे और जिंदगी की रोज़मर्रा की ज़रूरतें भी इसी यकीन के साथ हदीसों में शामिल की गईं कि वह सारे काम और बातें रूहुल-कुदुस की रोशनी में थे।

इसी तरह अबू दाऊद इत्यादि में यह हदीस मौजूद है और इमाम अहमद कुछ वसीलों से अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि अब्दुल्लाह ने कहा, 'मैं जो कुछ भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनता था, उसे लिख लेता था ताकि उसे याद रख सकूँ। लेकिन कुछ लोगों ने मुझे रोकते हुए कहा कि ऐसा मत करो क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक इंसान हैं, कभी-कभी गुस्से में भी कुछ कह देते हैं।' मैं यह सुनकर लिखना छोड़ दिया, फिर मैंने इस बात का ज़िक्र हुज़ूर से किया। इस पर आपने फ़रमाया, 'उस जात की कसम, जिसके हाथ में मेरी जान है, जो कुछ मुझसे निकलता है, वह सब अल्लाह की तरफ़ से होता है।'

अगर यह कहा जाए कि इन्हीं हदीसों में कुछ मामलों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज्तिहादी गलती (स्वयं के विचार पर आधारित निर्णय) का भी ज़िक्र है, तो फिर यह कैसे संभव है कि उनका हर बयान और अमल वही से हो? इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह इज्तिहादी गलती भी वही की रोशनी से अलग नहीं थी, और हुज़ूर कभी भी अल्लाह की गिरफ्त से जुदा नहीं हुए। यह गलती भी उसी तरह थी जैसे कि नमाज़ में कुछ बार भूल होने दी गई ताकि इससे दीन के मसाइल पैदा हों। इसी तरह कभी-कभी इज्तिहादी गलती होने दी गई ताकि इस के जरिए से दीन की तकमील हो और कुछ गहरे मसाइल उजागर हों।

यह भूल भी आम इंसानों की तरह नहीं थी, बल्कि असल में वही की रंग में थी क्योंकि अल्लाह की तरफ से यह एक खास तस्सरुफ (असर) था, जो नबी की ज़ात पर हावी होकर कभी-कभी उन्हें उस तरफ़ मोड़ देता था, जिसमें अल्लाह की बहुत सी हिकमतें होती थीं। इसलिए हम इस इज्तिहादी गलती को भी वही से अलग नहीं समझते क्योंकि यह कोई मामूली बात नहीं थी, बल्कि अल्लाह तआला उस समय अपने नबी को अपने कब्ज़े में लेकर आम भलाई के लिए एक नूर को भूल या गलत इज्तिहाद की शक्ल में ज़ाहिर कर देता था और फिर साथ ही वही जोश में आकर सही बात को सामने ले आती थी, जैसे बहती हुई नहर का पानी किसी मसलहत के तहत रोक दिया जाए और फिर बहने दिया जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की एक मिसाल देते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा एक अंजीर के पेड़ की तरफ दौड़े ताकि उसका फल खाएँ, जबकि रूहुल-कुदुस उनके साथ था, लेकिन इसने यह इत्तिला नहीं दी कि उस समय उस पेड़ पर कोई फल नहीं था। बहरहाल, यह सब जानते हैं कि यह बहुत दुर्लभ (कम होने वाली) चीज थी, इसलिए इसे न होने के बराबर समझा जा सकता है।

तो जब हमारे सरवर-ए-कायनात, हमारे मौला मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तकरीबन दस लाख के करीब अफ़आल (कर्म) और अक़वाल (बयान) में सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह का जलवा नज़र आता है, हर एक बात, हर हरकत, हर सुकून, हर बयान और हर अमल में रूहुल-कुदुस की चमकती हुई किरणें नज़र आती हैं, तो फिर अगर कभी-कभार इंसानी बशरीयत की कोई झलक भी नज़र आ जाए, तो इससे क्या नुकसान? बल्कि यह ज़रूरी था ताकि हुज़ूर की इंसानियत का पहलू भी साबित हो और लोग उन्हें खुदा मानने की गलती में न पड़ जाएँ।

(आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ायन,भाग 5, पृष्ठ 112-116)

इसलिए जब भी किसी हदीस, तारीख़ या सीरत की किताब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी से संबंधित कोई भी रिवायत बयान की जाए, तो इसे इस कुरआनी आयत और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरों की रोशनी में देखना और परखना चाहिए, न कि जल्दबाजी में इल्ज़ामात लगाकर हर ओरिएंटलिस्ट (पश्चिमी आलोचक) की बात को मान लिया जाए और यह समझा जाए कि हम इसका कोई जवाब नहीं दे सकते।

यही असल काम है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तक़द्दुस (पवित्रता) को कायम रखने का, न कि सिर्फ नारे लगाना।

दो दिन बाद, इंशा अल्लाह, रमज़ान भी शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला हमें इससे भरपूर फायदा उठाने, मक़बूल रोज़े रखने और दुआएँ करने की तौफ़ीक़ अता करे। इसके लिए दुआ भी करें और कोशिश भी करें।

नमाज़ जनाज़ गायब मैं अभी नमाज़ जनाज़ गायब पढ़ाऊँगा। यह चोधरी मुहम्मद अनवर रियाज़ साहिब (रब्वा) का है, जो चोधरी मुहम्मद इस्लाम साहिब मरहूम के बेटे थे। पिछले दिनों इनका इंतेकाल हुआ, इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

अल्लाह तआला उनकी मगफिरत करे और उनके बच्चों को सब्र दे, खास तौर पर उनके बेटे को, जो बाहर हैं।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

अत्याचारियों पर क़ाबू पाने के बाद, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो क्षमा, दरगुज़र और नरमी का व्यवहार किया, पूर्वाग्रही लेखक उसका कोई उल्लेख नहीं करते, प्रशंसा करना तो दूर की बात है। फिर जब उन्होंने संधि की अत्याचारियों की और निर्वासन की शर्त को स्वीकार कर लिया, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें माफ़ कर दिया। इससे भी आगे बढ़कर, जब इन यहूदियों ने अनुरोध किया कि हमें यहीं रहने दिया जाए ताकि हम कृषि कार्य जारी रख सकें और आधी उपज आपको दे दिया करें, तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी यह याचिका भी स्वीकार कर ली और शांति और सुरक्षा की एक संधि स्थापित की।

एक रिवायत के अनुसार, जब हज़रत बिश्र बिन बराअ रज़ि. का निधन हुआ, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया कि उस (यहूदी) महिला को क़त्ल कर दिया जाए, तो उसे मार दिया गया ... लेकिन अधिक संभावना यही है कि उसे माफ़ कर दिया गया था, जैसा कि मुस्लिम की हदीस से स्पष्ट रूप से साबित होता है और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का भी यही विचार था।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जवानी और बीते हुए वर्ष इस बात की स्पष्ट गवाही देते हैं कि (नऊज़ूबि-ल्लाह) आपको विवाहों के भोग-विलास से कोई संबंध नहीं था। बाद में आपने जो विवाह किए, उसके पीछे एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था, जिससे विरोधी क़ौमों और क़बीलों के बीच मेल-मिलाप, प्रेम और सौहार्द्र स्थापित हो तथा विश्वास का माहौल बने। जैसे कि बनू मुस्तलिक के सरदार हारिस की बेटी जुवैरिया से, क़ुरैश के अबू सुफ़यान की बेटी उम्मे हबीबा से।

निश्चित रूप से, ये सभी विवाह ईश्वरीय संकेतों के तहत किए गए थे, और उनके परिणाम अत्यंत कल्याणकारी और बुद्धिमत्तापूर्ण थे।

अगर किसी हदीस या इतिहास व सीरत की किताब में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन से संबंधित कोई भी घटना वर्णन की जाए, तो उसे क़ुरआन की आयत के प्रकाश में देखना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि अल्लाह की ख़ातिर आपका सब कुछ था। साथ ही, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लिखित बातों को आधार बनाना चाहिए, न कि केवल निराधार आरोप लगा दिए जाएं और हर ओरिएं-टलिस्ट (पश्चिमी विद्वान) की बात को मानकर यह समझ लिया जाए कि हम निरुत्तर हो गए हैं।

यही है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र व्यक्तित्व को बनाए रखने का असल तरीका, केवल नारे लगाना इसका समाधान नहीं है।

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के संदर्भ में नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत का वर्णन

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़हर देने की नाकाम साज़िश और हज़रत सफ़िया रज़ि. से विवाह का विवरण।

दो दिन बाद, इंशाअल्लाह, रमज़ान भी शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला इस महीने का भरपूर लाभ उठाने, स्वकृत रोज़े और दुआओं की तौफ़ीक़ हर एक को अता करे। इसके लिए दुआ भी करें और कोशिश भी करें।

श्रीमान चौधरी मुहम्मद अनवर रियाज़ साहिब (रबवा) का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा गायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 फ़रवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के संदर्भ में युद्ध के दौरान आपका आचरण कैसा था? इस बारे में ग़ज़वा-ए-ख़ैबर का उल्लेख हो रहा था।

ख़ैबर की जंग के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़हर देकर मारने की साज़िश। ख़ैबर की जंग के बाद यहूदियों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने की एक साज़िश रची। उन्होंने ज़हर में डूबी हुई बकरी का गोश्त खिलाने की कोशिश की। इसका विवरण यह है कि जब ख़ैबर फतह हो गया और अहल-ए-ख़ैबर के साथ एक संधि हो गई, तो उन्हें बुरी तरह पराजित होने के बावजूद फिर से नबी अकर्म सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दया और कृपा प्राप्त हुई। आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम न केवल उन्हें माफ़ किया बल्कि ख़ैबर में रहने की भी अनुमति दे दी।

जब लोग संतुष्ट हो गए, तो एक दिन यहूदियों की सेना के सेनापति सलाम बिन मिशकम की पत्नी ज़ैनब बिंत हारिस ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में भुनी हुई बकरी का गोश्त भेंट किया और कहा कि यह आपके लिए एक तोहफ़ा है। कुछ जगह यह भी मिलता है कि इस साज़िश में वह अकेली नहीं थी बल्कि कुछ और यहूदी भी शामिल थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश पर वह हदीया आपके सामने रखा गया। उस समय कुछ सहाबा भी वहाँ मौजूद थे, जिनमें हज़रत बिश्र बिन बराअ रज़ि. भी थे।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कि क़रीब आओ। फिर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसमें से दस्ती का गोश्त उठाया और थोड़ा सा टुकड़ा लिया। दूसरे लोगों ने भी लिया। लेकिन तभी आपने फ़रमाया: "अपने हाथ रोक लो, क्योंकि यह दस्ती का गोश्त बता रहा है कि इसमें ज़हर मिला हुआ है।"

हज़रत बिश्र बिन बराअ रज़ि. ने कहा: "उस ज़ात की क़सम जिसने आपको इज्ज़त और बुलंदी दी, मुझे भी अपने कौर में कुछ महसूस हुआ था, लेकिन मैंने इसे नहीं उगला क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि आपका खाना ख़राब हो।"

फिर जब आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपना कौर उगल दिया, तो मुझे आपसे अधिक आपकी चिंता हुई और मैं ख़ुश हुआ कि आपने इसे निगला नहीं। हज़रत बिश्र रज़ि. अभी अपनी जगह से उठे भी नहीं थे कि उनके शरीर का रंग बदलने लगा और फिर वे इतने बीमार पड़ गए कि खुद से करवट तक नहीं बदल सकते थे। यहाँ तक कि लगभग एक साल बाद उनकी मृत्यु हो गई। कुछ अन्य रिवायतों में आता है कि वे उसी समय वहीं बैठी हालत में रह गए और तुरंत ही उनकी मृत्यु हो गई।

(स्रोत: सीरत अल-हलबिया,भाग 3, पृष्ठ 79, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत),(बुखारी, किताब अल-मग़ाज़ी, हदीस 3169), (अय्याम फी हयात अल-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, फ़ारूक हमादा, पृष्ठ 144, दारुस्सलाम, क़ाहिरा)

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस महिला को बुलाया और पूछा: "क्या तूने इस बकरी में ज़हर मिलाया था?"

उसने कहा: "आपको यह कैसे मालूम हुआ?"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मुझे इस दस्ती के गोश्त ने बताया जो मेरे हाथ में है।"

उसने कबूल किया और कहा: "हाँ, मैंने ज़हर मिलाया था।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: "तुझे ऐसा करने के लिए किसने कहा था?"

उसने जवाब दिया: "जो कुछ आपने मेरी क़ौम के साथ किया, वह आपसे छिपा नहीं है। मैंने सोचा कि अगर आप एक बादशाह हैं, तो हम आपसे छुटकारा पा जाएंगे और अगर आप नबी हैं, तो आपको इसकी सूचना दे दी जाएगी।"

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ कर दिया और उस महिला से कोई बदला नहीं लिया।

हालाँकि, एक अन्य रिवायत के अनुसार, जब हज़रत बिश्र बिन बराअ़ रज़ि. की मृत्यु हो गई, तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया कि इस महिला को क़त्ल कर दिया जाए, और उसे मार दिया गया।

(स्रोत: सुबल अल-हुदा वल-रशाद,भाग 5, पृष्ठ 134-135, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

सही मुस्लिम में वर्णित है कि उस महिला को कतल नहीं किया गया था।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक यहूदी महिला रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ज़हर मिली हुई बकरी का गोश्त लेकर आई। आपने उसमें से कुछ खा लिया। फिर उस महिला को आपके पास लाया गया। आपने उससे इसके बारे में पूछा। उसने कहा कि मेरा इरादा आपको मारने का था। आपने फ़रमाया, "यह नहीं हो सकता कि अल्लाह तुम्हें इसकी ताकत दे," या यह कहा, "अल्लाह मुझे इस पर शक्ति देगा।"

रावी कहते हैं कि लोगों ने पूछा, "क्या हम इस महिला को मार न दें जिसने ऐसा करने का इरादा किया था?" आपने फ़रमाया, "नहीं।" रावी कहते हैं कि मैं इस ज़हर का असर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गले में महसूस करता था।

(सही मुस्लिम, किताब अस-सलाम, बाब अस-सम्म, अनुवादित खंड 12, पृष्ठ 66, नूर फाउंडेशन)

इमाम नववी ने सही मुस्लिम की व्याख्या में लिखा है कि हज़रत जाबिर रज़िय-ल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उस महिला को मरवा दिया था, और हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि आपने उस महिला को हज़रत बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हो के वारिसों के सुपुर्द कर दिया, जिन्होंने उसे क़िसास (बदले) के तौर पर मार दिया।

मोहद्दिसीन (हदीस विशेषज्ञों) का इस बात पर भी सहमति है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे मरवा दिया था। क़ाज़ी अयाज़ के अनुसार, इन दोनों विरोधाभासी रिवायतों को इस तरह से मिलाया जा सकता है कि पहले आपने उसे नहीं मारा था, लेकिन जब हज़रत बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हो का देहांत हो गया, तो आपने उस महिला को उनके वारिसों के सुपुर्द कर दिया, जिन्होंने उसे क़िसास के रूप में मार दिया।

(अल-मिनहाज, शरह सहीह मुस्लिम, खंड 14, पृष्ठ 1638, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

हालांकि, सबसे अधिक संभावना यही है कि उस महिला को माफ कर दिया गया था, जैसा कि सही मुस्लिम की हदीस स्पष्ट रूप से दर्शाती है और हज़रत मिर्ज़ा बशी-रुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो की भी यही राय थी।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "एक यहूदी महिला ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जानवर के किस हिस्से का गोश्त ज्यादा पसंद है? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया कि आपको बाजू का गोश्त ज्यादा पसंद है।

इस पर उसने एक बकरा ज़बह किया और उसके क़बाब बनाए, फिर उसमें ज़हर मिला दिया, खासकर बाजुओं में। जब सूरज डूबने के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) शाम की नमाज़ पढ़कर अपने डेरे की तरफ लौट रहे थे, तो आपने देखा कि आपके खेमे के पास एक औरत बैठी हुई है।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पूछा, "बीबी! तुम्हारा क्या काम है?" उसने कहा, "ऐ अबुल-क़ासिम! मैं आपके लिए एक तोहफा लाई हूँ।"

फिर जब खाने के लिए बैठा गया, तो वह भूना हुआ गोश्त भी रखा गया। आपने उसमें से एक निवाला खाया और एक सहाबी हज़रत बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी खाया। इतने में बाकी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी खाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो आपने कहा, "मत खाओ, क्योंकि इस हाथ ने मुझे बता दिया है कि इसमें ज़हर मिला हुआ है।"

(इसका यह मतलब नहीं कि आपको इस बारे में कोई वह्य (ईश्वरीय सन्देश) हुआ था, बल्कि यह एक अरबी मुहावरा है, जिसका अर्थ है कि इसे चखकर मुझे पता चला कि इसमें ज़हर मिला हुआ है।)

इस पर हज़रत बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा, "जिस अल्लाह ने आपको इज्जत दी है, उसकी कसम! मुझे भी इस निवाले में ज़हर महसूस हुआ। मेरा दिल चाहा कि मैं इसे फेंक दूं, लेकिन मैंने सोचा कि अगर मैंने ऐसा किया तो शायद आपकी तबीयत पर असर पड़े और आपका खाना खराब न हो जाए।"

इसके बाद हज़रत बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत खराब हो गई और कुछ रिवायतों में आता है कि वे वहीं खैबर में वफ़ात पा गए, और कुछ में आता है कि कुछ समय तक बीमार रहने के बाद उनका देहांत हो गया।

इसके बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कुछ गोश्त एक कुत्ते के सामने डलवाया, जो उसे खाते ही मर गया। फिर आपने उस महिला को बुलाया और पूछा, "क्या तुमने इस बकरी में ज़हर मिलाया था?"

उसने कहा, "आपको यह किसने बताया?"

आपके हाथ में उस समय बकरी का बाजू था। आपने फ़रमाया, "इस हाथ ने मुझे बताया।"

इस पर उस महिला को समझ आ गया कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर यह भेद खुल चुका है, और उसने स्वीकार कर लिया कि उसने ज़हर मिलाया था।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उससे पूछा, "तुम इस नापसंद काम के लिए क्यों तैयार हुई?"

उसने जवाब दिया, "मेरी क़ौम से आपकी जंग हुई थी और मेरे रिश्तेदार उस जंग में मारे गए थे। मेरे दिल में यह ख़याल आया कि मैं आपको ज़हर दे दूं। अगर आपका काम इंसानों जैसा ही हुआ, तो हमें आपसे छुटकारा मिल जाएगा, और अगर आप वास्तव में नबी होंगे, तो अल्लाह खुद आपको बचा लेगा।"

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह सुनकर उसे माफ कर दिया और उसकी वह सज़ा, जो निश्चित रूप से क़त्ल थी, नहीं दी।

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, खंड 20, पृष्ठ 327-329)

यह हज़रत मसलिह मौऊद ؓका विचार है।

यह भी कहा जाता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात इस ज़हर की वजह से हुई है।

क्या यह सही है? सही बुखारी में है कि हज़रत आयशा ؓबयान करती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बीमारी के दौरान फ़रमाते थे कि "ऐ आयशा! उस खाने की तकलीफ़ जो ख़ैबर में मैंने खाया था, मुझे हमेशा महसूस होती रही और अब भी इस ज़हर से मैं अपनी रगें कटती हुई महसूस कर रहा हूँ।"

इस हदीस से इस्तिनबात करते हुए कुछ मुसलमान मुफस्सिरीन और मुहद्दिसीन ने कहा है कि आपकी वफ़ात गोया ख़ैबर के मौक़े पर खाए गए ज़हरीले गोश्त की वजह से हुई और इस वफ़ात को इसी कारण शहादत से ताबीर किया जाता है और कहा जाता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद-ए-आज़म थे।

(दलाईलुन्नुबूवत,भाग 4, पृष्ठ 264, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत),(फ़तहुल बारी,भाग 8, पृष्ठ 166, कदीमी कुतुब खाना, कराची),(सही बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबीसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व वफ़ातुहु, हदीस 4428),(सही बुखारी, किताबुल हिबा, बाब क़ुबूलुल हदिय्या, हदीस 2617)

हालाँकि, आपके सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए इस तकल्लुफ़ की कोई ज़रूरत नहीं।

नबी तो उस मक़ाम और मरतबे का हामिल होता है कि वह शहीद भी होता है, सिद्दीक भी होता है। बल्कि अगर ग़ौर से देखा जाए तो ऐसा कहना दुश्मन को हंसी का मौक़ा देने के बराबर है।

यहूदियों ने तो इसलिए ज़हर दिया था कि अगर यह अल्लाह का सच्चा नबी होगा तो इस ज़हर से बच जाएगा और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच गए तो उन्होंने जान लिया कि आप हक़ीक़तन अल्लाह के सच्चे नबी हैं और उनकी नज़र में यह एक मोजज़ा साबित हुआ। लेकिन कुछ सादा-लौह लोग हैं, जो इस ज़हर से आपकी वफ़ात को मानने के लिए तैयार बैठे हैं।

हक़ीक़त यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हरगिज़--हरगिज़ इस ज़हर की वजह से नहीं हुई थी। यह तो सिर्फ़ एक तकलीफ़ का इज़हार था और हर कोई जानता है कि कभी-कभी कोई जिस्मानी तकलीफ़, ज़ख़्म या बीमारी किसी ख़ास मौक़े पर या किसी ख़ास मौसम में किसी वजह से बाहर आ जाती है।

अगर इसकी तफ़सील में जाएँ तो यह भी मिलता है कि ज़हर मिला हुआ यह गोश्त आपने मुँह में डाला था लेकिन निगला नहीं था, और मुँह में जाने की वजह से आपके हलक़ या कुवे पर ज़ख़्म आ गया था और कभी-कभी खाने के दौरान उसमें तकलीफ़ महसूस होती थी और इसी तकलीफ़ का इज़हार आपने आख़िरी बीमारी में फ़रमाया होगा।

(फ़तहुल बारी,भाग 16, पृष्ठ 303, कदीमी कुतुब खाना, कराची),(सीरतुल हलबिया,भाग 3, पृष्ठ 79, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

ख़ैबर की जंग के हवाले से हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हासे निकाह का भी ज़िक्र मिलता है। इसकी तफ़सील में लिखा है कि जब ख़ैबर का क़िला नज़ार फ़तह किया गया, तो वहाँ बहुत से क़ैदी भी बनाए गए। इन क़ैदियों में हज़रत सफ़िया, उनकी चचेरी बहन और दूसरी औरतें भी थीं। कुछ किताबों में नज़ार की जगह क़मूस क़िला का नाम मिलता है।

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हासे रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कतीबा के किलों में पहुँचने से पहले ही नज़ार के क़िले में क़ैदी बना लिया था।

(माख़ूज़: फ़तह ख़ैबर, अल्लामा मुहम्मद अहमद बाशमील, पृष्ठ 161, नफ़ीस अकैडमी, कराची), (अस्सीरतुन नबविय्या, इब्न हिशाम, पृष्ठ 697, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

किनाना की राय के मुताबिक़, क़िला नज़ार ज़्यादा मज़बूत था, इसलिए उन्होंने औरतों और बच्चों को क़िला नज़ार में मुन्तक़िल कर दिया था।

(सीरत एनसाइक्लोपीडिया,भाग 8, पृष्ठ 424, दारुस्सलाम)

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाके आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हिस्से में आने और उनसे निकाह की तफ़सीलें इस तरह बयान हुई हैं कि जब ख़ैबर में क़ैदियों को इकट्ठा किया गया, तो हज़रत दिह्या आए और कहा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे इन क़ैदियों में से एक लड़की दे दीजिए।" आपने फ़रमाया, "जाओ, एक लड़की ले लो।" उन्होंने हुय्य बिन अख़्तब की बेटी सफ़िया को ले लिया। इस पर एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा, "ऐ अल्लाह के नबी! आपने दिह्या को हुय्य की बेटी दे दी है, जो बनी क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की शहज़ादी है। वह तो आप के अतिरिक्त किसी के लिए मुनासिब नहीं।"

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "उसे बुला लाओ।" वह उसे ले आया। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे देखा, तो फ़रमाया, "इन क़ैदियों में से इसके अतिरिक्त कोई और लड़की तुम ले लो।" हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाको आज़ाद कर दिया।

मुस्नद अहमद बिन हंबल की रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हासे फ़रमाया, "मैं तुम्हें आज़ाद करता हूँ। चाहो तो मुझसे निकाह कर लो, और चाहो तो अपने क़बीले की तरफ़ वापस चली जाओ।" इस पर उन्होंने आज़ादी और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह को पसंद किया। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़, आपने उन्हें इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दी, तो उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल,भाग 4, पृष्ठ 357, हदीस नंबर 12436, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत),(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, सुलाबी, पृष्ठ 280-281, मक़तबा दारुस्सलाम)

जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत दाहिया रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि कोई और लौंडी ले जाओ, तो एक रिवायत के मुताबिक़, आपने उन्हें हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाकी चचेरी बहन या किनाना बिन रबीअ की बहन अता की। कुछ रिवायतों के मुताबिक़, आपने हज़रत दाहिया रज़ियल्लाहु अन्हु को सात ग़ुलाम या लौंडियाँ दीं और हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाको हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास भेज दिया।

(अल-इक्तिफ़ा,भाग 1, पृष्ठ 187, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत),(सीरतुन्नबी, शिब्ली नोमानी,भाग 1, पृष्ठ 329, मक़तबा इस्लामिया),(अल-बिदायह वान-निहायह,भाग 6, पृष्ठ 293, दारु हिजर),(नजाहुल क़ारी, शरह सहीह बुख़ार,भाग 13, पृष्ठ 106, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

ख़ैबर के समस्त मामलात से फ़ारिग़ होकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर से रवाना हुए, और कोई छह मील के फ़ासले पर आपने पड़ाव डालना चाहा, ताकि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हासे निकाह मुकम्मल हो सके, लेकिन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाकी ख़्वाहिश पर आपने सफ़र जारी रखा और ख़ैबर से क़रीब बारह मील के फ़ासले पर 'सहबा' नामी जगह पर पड़ाव डाला।

हज़रत उम्मे सुलेम रज़ियल्लाहु अन्हुने दुल्हन को तैयार किया। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हासे पूछा कि पहली जगह पर पड़ाव डालने से क्यों रोका था? उनके जवाब से मालूम होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आला अख़लाक़ ने किस तरह हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाके दिल को साफ़ कर दिया था।

यहूदी सरदार की बेटी और एक यहूदी सरदार की बीवी, जिसका बाप मुसलमानों के हाथों ग़ज़वा-ए-ख़ंदक के बाद क़त्ल हुआ था, जिसका शौहर जिससे महज़ दो महीने पहले शादी हुई थी—कुछ रोज़ पहले मारा गया था, जिसका चाचा भी मारा गया और कई क़रीबी रिश्तेदार भी मारे गए। वह ख़ुद बयान करती हैं कि उनके दिल में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए सख़्त नफ़रत थी।

लेकिन जब उन्होंने पहली बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात की, तो बहुत ही मोहब्बत और शफ़क़त से आप मिले और बार-बार उनसे इज़हार-ए--अफ़सोस फ़रमाते रहे, "ऐ सफ़िया! तेरा बाप सारे अरब को हमारे ख़िलाफ़ तैयार कर लाया था, उसने यह किया, उसने वह किया, और आख़िरकार हमें अपनी हिफ़ाज़त के लिए ख़ैबर आना पड़ा, ताकि उसकी साज़िशों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करें।"

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाबयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इतनी मोहब्बत और नरमी से यह बात बार-बार बयान की कि उनका दिल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए बिल्कुल साफ़ हो गया और जब पहली बार आपकी महफ़िल से उठीं, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा उन्हें कोई महबूब न था।

जब ख़ैबर से वापसी का सफ़र शुरू हुआ, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उनके साथ हुस्ने-सुलूक यह था कि जब सफ़र के लिए रवाना होने लगे, तो आपने सवारी पर उनके बैठने के लिए अपनी चादर तह करके रखी। फिर अपना घुटना ज़मीन पर रखा, जिस पर हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाने अपना पाँव रखा और ऊँट पर सवार हुईं। रास्ते में जब हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाको ऊँघ आने लगती और उनका सिर हौदज से टकराने लगता, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने मुबारक हाथ से उनका सिर थाम लेते और फ़रमाते, "कहीं चोट न लग जाए।"

क्योंकि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाअब उम्महातुल मोमिनीन में शामिल हो चुकी थीं, इसलिए ख़ैबर से वापसी पर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें अपने पीछे ऊँट पर सवार किया और पर्दे के लिए उन पर चादर डाल दी, जिससे यह ज़ाहिर हो कि वह आपकी लौंडी नहीं, बल्कि आपकी बीवी हैं।

बहरहाल, छह मील पर न रुकने का जो जवाब उन्होंने दिया, उसकी तफ़सील इस प्रकार बयान हुई है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उत्तम नैतिक गुणों का ही प्रभाव था कि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाको दुनिया में सबसे अधिक प्रिय कोई था, तो वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही थे। अतः हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जवाब दिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ैबर के बहुत निकट पड़ाव डालना चाहते थे, लेकिन मुझे अपनी क़ौम से भय था कि कहीं वे आपको कोई हानि पहुँचाने की कोशिश न करें। इसलिए मैंने चाहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ैबर से कुछ और दूर जाकर ठहरें। यहूदियों की साज़िशों और उनके ख़तरनाक इरादों से सहाबा भी परिचित थे, और ख़ैबर की ज़ैनब नामक महिला के ज़हर मिले खाने के माध्यम से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हत्या की साज़िश को अभी कुछ ही दिन बीते थे। इसलिए आपके समर्पित सहाबा रज़ियल्लाहु अन्होअब किसी भी क्षण आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहते थे।

यहाँ अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हो का क़िस्सा बयान होता है, जिन्होंने रातभर पहरा दिया, और उनकी मासूम मोहब्बत का एक अनोखा प्रदर्शन इस शादी के दौरान देखने को मिला। वह इस प्रकार है कि रात बीतने के बाद जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सुबह अपने ख़ेमें से बाहर निकले तो देखा कि हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो तलवार हाथ में लिए आपके ख़ेमे के बाहर मुस्तैद खड़े हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मुझे इस यहूदी नव-मुस्लिम महिला, यानी हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हासे आशंका हुई कि उसके पिता, पति और क़ौम के लोग क़त्ल हुए हैं और अभी-अभी इस्लाम क़बूल किया है, कहीं वह आपको कोई नुक़सान न पहुँचा दे। इसलिए मैंने पूरी रात तलवार लिए पहरा दिया।" हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्होकी इस मासूम मोहब्बत के जवाब में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें दुआ देते हुए फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्होकी रक्षा फ़रमा, जैसे उन्होंने मेरी हिफ़ाज़त करते हुए रात गुज़ारी।" उनका असली नाम ख़ालिद बिन ज़ैद था। यही वे सहाबी हैं, जिन्हें हिजरत-ए-मदीना के मौक़े पर कई महीनों तक नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मेज़बानी का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। 50 हिजरी में एक अभियान के दौरान इनका निधन

हुआ और इस्तांबुल में उनका मज़ार है।

बहरहाल, अगले दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से वलीमा की दावत का आयोजन किया गया, जो अत्यंत गरिमामयी और सादगीपूर्ण थी। खजूर, पनीर और घी से तैयार 'हैस' सबके लिए परोसा गया। तीन दिनों के प्रवास के बाद यहाँ से प्रस्थान किया गया। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाकी स्वतंत्रता ही उनका महर (विवाहिक उपहार) निर्धारित हुआ।

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के एक स्वप्न का भी उल्लेख मिलता है, जिसकी सच्चाई भी इस शादी से स्पष्ट होती है। एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाकी आँख के निकट एक नीले निशान को देखा तो पूछा कि यह चोट का निशान किस वजह से है? उन्होंने बताया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ैबर आने से कुछ दिन पहले, या कुछ रिवायतों के अनुसार, ख़ैबर के घेराव के दिनों में मैंने एक सपना देखा कि चाँद यसरिब (मदीना) की दिशा से आया और मेरी गोद में गिर गया। जब मैंने यह सपना अपने पति किनाना को बताया तो उसने मेरे चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा और कहा, "क्या तुम यसरिब के उस बादशाह यानी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से शादी करने के सपने देख रही हो?"

कुछ रिवायतों के अनुसार, यह सपना बहुत पुराना था और उनके पिता हुयय बिन अख़तब ने उन्हें थप्पड़ मारा था, लेकिन अधिकतर पुस्तकों में यही उल्लेख है कि उनके पति ने थप्पड़ मारा था, और यही अधिक समीचीन प्रतीत होता है। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाका असली नाम ज़ैनब था, लेकिन माल-ए-ग़नीमत के वितरण से पूर्व ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें मुक्त कर दिया था। उस समय की प्रथा के अनुसार, माल-ए-ग़नीमत में जो वस्तुएँ सेनापति के लिए होती थीं, उन्हें 'सफ़िय्या' या 'अस-सफ़ा' कहा जाता था। इस कारण उनका नाम 'सफ़िया' प्रसिद्ध हो गया। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाने 50 हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हो के शासनकाल में देहांत पाया और जन्नत-उल-बक़ी में दफ़न की गईं।

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाकी शादी पर भी कुछ पश्चिमी लेखक आलोचना करते हैं और अपनी आदत के अनुसार इस पर आपत्ति उठाते हैं, जो उनकी अज्ञानता और पूर्वाग्रह का प्रमाण है। उदाहरण के लिए, 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के नौवें संस्करण में 'मुहम्मडनिज़्म' के तहत लिखा है, जिसका अनुवाद यह है कि इस विजय अभियान का अंतिम कार्य यह था कि राजा की बेटी से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विवाह किया। सफ़िया को ज़रा भी घृणा नहीं हुई, जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही उसके पिता हुयय और उसके पति किनाना की मृत्यु का कारण बने थे। बल्कि उसने अत्यंत शान के साथ स्वयं को नए रंग में ढाल लिया। लेखक आगे लिखता है कि इससे अधिक प्रशंसनीय कार्य तो एक अन्य यहूदी महिला ज़ैनब ने किया, जिसने अपनी क़ौम के क़ातिल को ज़हर देने का प्रयास किया और इस अपराध के दंडस्वरूप मृत्यु को प्राप्त हुई। यह प्रयास असफल रहा, लेकिन कहा जाता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी अंतिम बीमारी में भी इस ज़हर का प्रभाव महसूस करते थे। यानी वह सफ़िया पर यह कहकर आलोचना कर रहा है कि उनके पिता और पति मारे गए और उन्हें प्रतिशोध लेना चाहिए था, परंतु उन्होंने अपने हित को प्राथमिकता दी और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से विवाह कर लिया। इसके विपरीत, वह दूसरी यहूदी महिला, जिसने ज़हर देने का प्रयास किया था, उसकी प्रशंसा कर रहा है कि कम से कम उसने प्रतिशोध की भावना तो दिखाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मारने की कोशिश की।

इन लेखकों की इस्लाम और इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से द्वेष और विरोध की कोई सीमा नहीं है। इतना भी नहीं सोचते कि थोड़ी-सी भी सच्ची बुद्धि रखने वाला व्यक्ति उनकी लिखाई से क्या निष्कर्ष निकाल सकता है। उनके लेखन से स्वतः ही उनकी संकीर्णता और पक्षपात झलकता है। वे न्याय से काम नहीं लेते।

ख़ैबर के यहूदियों का पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से घोर संघर्ष हुआ। फिर वे बुरी तरह पराजित हुए। इसके बाद उनके साथ क्या व्यवहार किया जाना चाहिए था? यह युद्ध का नियम चाहे उस समय का हो या आज की सभ्य दुनिया का, उसके अनुसार यदि उन सभी को मार दिया जाता तो यह न्यायसंगत होता। उनकी बाइबल के अनुसार भी और उस समय के नियमों और रीति-रिवाजों के अनुसार भी यह पूरी तरह जायज़ था, लेकिन

उन अत्याचारियों पर विजय प्राप्त करने के बाद पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस क्षमा, उदारता और कोमलता का व्यवहार किया, उसका कोई उल्लेख नहीं करते, प्रशंसा करना तो दूर की बात है। फिर जब उन्होंने संधि की प्रार्थना की, तो उसे स्वीकार करते हुए उन्हें निर्वासन की शर्त पर क्षमा कर दिया। इससे आगे बढ़कर जब इन यहूदियों ने यह अनुरोध किया कि हमें यहीं रहने दिया जाए, हम खेती का काम जारी रखें और आधी उपज आपको देते रहें, तो आपने उनकी यह माँग भी मान ली और शांति समझौता हुआ।

लेकिन इस संधि की स्याही अभी सूखी भी नहीं थी कि इन लोगों ने षड्यंत्र रचकर एक महिला के माध्यम से पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़हर देने की कोशिश की और इस महिला ने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया, जैसा कि पहले बताया गया। आज की सभ्य दुनिया के तथाकथित शिक्षित लोग इस विश्वासघाती महिला को एक राष्ट्रीय नायक के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, और जिस महिला ने सत्य को पहचानकर पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्कृष्ट चरित्र को प्रत्यक्ष देखकर इस्लाम को स्वीकार कर लिया, और स्वतंत्रता का प्रमाणपत्र दिए जाने के बावजूद जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि तुम आज़ाद हो फिर भी आपकी संगति को प्राथमिकता दी, उस पर आलोचना कर रहे हैं। यानी इस समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता और न्याय व निष्पक्षता के सभी सिद्धांत भुला दिए जाते हैं।

इसी तरह कुछ अन्य आलोचक आपत्ति करते हैं और अत्यंत कुरूप ढंग से यह आरोप लगाते हैं कि जब पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा की सुंदरता की प्रशंसा सुनी तो आपने उन्हें हज़रत दिह्या रज़ियल्लाहु अन्हु से वापस मांग लिया और स्वयं उनसे विवाह कर लिया आदि। वास्तव में, यह आरोप वे अपनी मानसिक गिरावट के कारण लगाते हैं, और दूसरा कारण यह है कि वे पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वास्तविक जीवनी और चरित्र को नहीं समझते। इनके दिल पक्षपात से भरे हुए हैं। यदि ये लोग निष्पक्षता और खुले दिल से देखें तो ऐसी सोच नहीं रखते।

क़ुरआन करीम भी अत्यंत सुंदर ढंग से इस ओर ध्यान दिलाता है कि "फक़द लबिथ्तु फी कुम उम्रं मिन क़ब्लिही अफ़ला त'क़िलून" (यूनुस: 17) अर्थात् "मैं इस पैग़ाम से पहले भी तुम्हारे बीच एक लंबा समय बिता चुका हूँ, तो क्या तुम सोच--विचार नहीं करते?"

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पूरी युवावस्था कैसे गुज़ारी? उस समाज में, जहाँ शराब और व्यभिचार की महफ़िलें आम थीं और गर्वपूर्वक इनका उल्लेख किया जाता था। आपने अपनी पूरी जवानी एक विधवा, प्रतिष्ठित और सम्मानित महिला के साथ विवाह करके गुज़ारी और लगभग पचास वर्ष की आयु तक उसी एक पत्नी के साथ जीवन बिताया। सुंदर से सुंदर महिला के प्रस्ताव स्वयं क़ुरैश के सरदारों ने आपको दिए थे, जैसा कि इतिहास से सिद्ध है, लेकिन आपने इन प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की युवावस्था और उनका संपूर्ण जीवन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि (नौऊज़ु बिल्लाह) उनका विवाह विलासिता या भोगविलास के लिए नहीं था। बाद में जो विवाह किए, उनका उद्देश्य यह था कि विरोधी क़बीलों के बीच मेल-जोल, प्रेम और सौहार्द्र उत्पन्न हो और विश्वास का वातावरण बने। जैसे बनू मुस्तलिक के सरदार हारिस की पुत्री जुवैरिया से, क़ुरैश के अबू सुफ़ियान की बेटी उम्मे हबीबा से।

इसी प्रकार, जब ख़ैबर विजय हुआ, तो बजाय इसके कि क़बीले के सरदार की पत्नी और बेटी को किसी सामान्य व्यक्ति के हवाले करके उनका अपमान और तिरस्कार किया जाता, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, जो आध्यात्मिक जगत के राजा थे और मदीना की राज्य व्यवस्था के प्रमुख थे, उन्होंने हज़रत सफ़िया को पहले स्वतंत्र किया और उनका सम्मान बढ़ाया। फिर उन्हें उनके परिवार के पास लौटने का प्रस्ताव देकर उनके स्थान और प्रतिष्ठा को और ऊँचा किया—कि जाओ, तुम अपने परिवार के पास जा सकती हो। फिर उनसे विवाह करके उन्हें वह स्थान दिया कि वे समस्त मोमिनों की माँ कहलाने लगीं। इसके साथ ही उनके क़बीले और परिवार की प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हुई और समाज में शांति और सौहार्द्र का माहौल बना।

विलियम मोंटगोमरी वाट, जो एक स्कॉटिश ओरिएंटलिस्ट है और जिसने इस्लाम और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अत्यंत कठोर टिप्पणियाँ अपनी पुस्तकों में की हैं, उसने अपनी पुस्तक *Muhammad at Medina* में, अत्यधिक पक्षपातपूर्ण होने के बावजूद, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाहों के बारे में यह स्वीकार करने पर मजबूर हुआ कि

"यहूदियों की बेटियों सफ़िया और रैहाना से विवाह के पीछे राजनीतिक उद्देश्य हो सकते हैं।"*

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 03-10 April 2025 Issue No. 14-15

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

इसने यह नहीं कहा कि कोई शारीरिक आकर्षण था, बल्कि कहा कि राजनीतिक उद्देश्य हो सकते हैं। जहाँ तक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाहों का संबंध है, या उन प्रस्तावित विवाहों का जिनकी चर्चा है, उनका मूल उद्देश्य राजनीतिक प्रतीत होता है। कम से कम इतना तो स्वीकार किया कि कोई गलत दृष्टिकोण नहीं था।

(Encyclopedia Britannica 9th Edition Vol 16 p.558)

(Muhammad At Medina By Montgomery Watt p.288)

हज़रत खलीफ़ा तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु, एक प्रसिद्ध ओरिएंटलिस्ट विलियम म्योर के हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के विवाह पर उठाए गए आपत्ति के उत्तर में फ़रमाते हैं:

"मिस्टर म्योर ने आपत्ति की, लेकिन वह यह नहीं जानता था कि अरब में यह प्रथा थी कि विजित राष्ट्र के सरदार की बेटी या पत्नी से विवाह करके देश में शांति और सौहार्द्र स्थापित किया जाता था और उस देश के प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ प्रेम उत्पन्न किया जाता था। इससे शासक वर्ग और जनता संतुष्ट हो जाते थे कि अब कोई खतरा नहीं है। इसी कारण ख़ैबर की विजय के बाद सभी यहूदियों ने वहीं रहने को प्राथमिकता दी।"*

(ख़ुत्बात-ए-नूर, पृष्ठ 532)

हमारे सीरत-लेखकों और इतिहासकारों ने भी हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाकी शादी के बारे में लापरवाही बरती है और यह गलती की है कि बिना छानबीन किए उन रिवायतों को स्वीकार करते चले गए जिनका कोई ठोस आधार नहीं है। मसलन, यह रिवायत लगभग हर इतिहास और सीरत की किताब में मिलती है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पहले हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाको हज़रत दाहिया रज़ियल्लाहु अन्हुके हवाले कर दिया था, लेकिन जब उनके सौंदर्य और आकर्षण की चर्चा सुनी, तो फिर उन्हें बुलाया और अपने लिए विशेष कर लिया। इस तरह की बात एक रिवायत में सही बुखारी में भी पाई जाती है, जिसमें हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुसे यह बयान किया गया है कि जब हम ख़ैबर पहुंचे और जब अल्लाह ने क़िला फ़तह करा दिया, तो सफ़िया बिन्त हुयय बिन अख़तब की सुंदरता का ज़िक्र आपके सामने किया गया। वह नई नवेली दुल्हन थी और उसका पति युद्ध में मारा गया था, यानी शादी को अभी थोड़ा ही समय हुआ था। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपने लिए चुन लिया। यह वह रिवायत है, जिस पर कुछ संकीर्ण मानसिकता के लोग आपत्ति करते हैं।

प्रसिद्ध सीरत-लेखक अल्लामा शिब्ली नोमानी इस रिवायत का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाके बारे में कुछ हदीस की किताबों में यह घटना बयान की गई है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले उन्हें हज़रत दिह्या कलबी को दिया था, फिर किसी ने उनकी सुंदरता की प्रशंसा की, तो आपने उन्हें उनसे वापस मांग लिया और उसके बदले में उन्हें सात दासियां दे दीं। विरोधियों ने इस रिवायत को बहुत नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है, और जब असल रिवायत में यह बात दर्ज है, तो ज़ाहिर है कि विरोधी इसे अपनी मर्ज़ी के अनुसार और भी बिगाड़ सकते हैं।

हक़ीक़त यह है कि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाका यह वाक़या हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुसे रिवायत है, लेकिन ख़ुद हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुसे कई रिवायतें बयान हुई हैं, और वे आपस में भिन्न हैं। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुसे एक दूसरी रिवायत यह भी है कि जब हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाहज़रत दाहिया रज़ियल्लाहु अन्हुके हिस्से में आईं, तो लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होकर अरज़ किया कि वह ख़ैबर के सरदारों में से एक उच्च प्रतिष्ठित और सम्माननीय महिला हैं। आपके अतिरिक्त कोई और उनके योग्य नहीं।

तो अगर कोई ऐसी रिवायत सच भी है, जैसा कि बुखारी की इस रिवायत में दर्ज है कि उनकी सुंदरता की तारीफ की गई थी, तो संभव है कि किसी सहाबी के बाद किसी रावि ने यह बयान किया हो और कुछ शब्द अपनी तरफ़ से इसमें जोड़ दिए हों, क्योंकि कोई भी सहाबी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में ऐसी बात नहीं कह सकता। पहले जो वाक़या बयान हुआ, उसे किसी सहाबी ने ही बयान किया है, लेकिन बाद में कुछ लोगों ने अपनी ओर से इन रिवायतों में मिलावट कर दी, क्योंकि कोई भी सहाबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में ऐसा कुछ बयान नहीं कर सकता जिससे उनकी गरिमा में किसी भी प्रकार की कमी की ओर संकेत होता हो। यह भी संभव है कि लोगों ने अपनी ओर से हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हाके सौंदर्य के साथ-साथ उनके अन्य गुणों और पारिवारिक प्रतिष्ठा का उल्लेख किया हो और किसी रावि ने संक्षेप में अपने शब्दों में उसे बयान कर दिया हो।

लेकिन एक महत्वपूर्ण और बुनियादी बात, जिस पर सीरत-लेखक ध्यान नहीं देते, वह यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस महान स्थान पर थे, उनके लिए किसी व्यक्ति में पाई जाने वाली ये विशेषताएँ और खूबियाँ केवल सतही और गौण थीं। आपने जब भी विवाह का निर्णय लिया, तो इसके पीछे बुनियादी कारण वे नहीं थे जो लोग बताते हैं, बल्कि असल बुनियादी कारण तो अल्लाह का आदेश होता था। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक-एक कार्य और हर एक गतिविधि अल्लाह की मंशा के बिना नहीं होती थी, जैसा कि खुद अल्लाह फरमाता है:

"قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ"

(अल्-ईनआम: 163)

तू कह दो कि मेरी इबादत, मेरी कुर्बानियाँ, मेरा जीना और मेरा मरना सिर्फ अल्लाह के लिए है, जो सारे जहान का रब है। जो हर काम सिर्फ उसकी खातिर करते हों और जिनकी हर घड़ी की रहनुमाई अर्श का खुदा करता हो, वे भला इतना बड़ा फैसला खुद कैसे कर सकते हैं?

यह सारी शादियाँ निस्संदेह अल्लाह के इशारे पर ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने की थीं। हाँ, इनके नतीजे अत्यंत शुभ और बड़ी हिकमतों वाले थे।

(बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब गज़्व-ए-ख़ैबर, हदीस 4211)

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, शिबली,भाग-1, पृष्ठ 283, मकतबा इस्लामिया), (माख़ूज़, बुखारी, किताबुस्सलात, बाब मायुज़्कर फिल फ़ख़िज, हदीस 371)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब "आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम" में फ़रमाते हैं कि "सहाबा का इस पर पूरा यकीन था कि हुज़ूर

शेष पृष 07 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad